Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

अल्लाह तआला का आदेश

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ط وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ○

(सूरः बकरः आयत:208)

अनुवाद : और लोगों में से कोई ऐसा भी है जो अल्लाह की प्रसन्नता के लिए अपनी जान बेच देता है, और अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा दयावान है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 10
अंक - 38
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

25 रबीउल् अव्वल , 1446-47 हिज्री कमरी, 18 तबूक 1404 हिज्री शम्सी, 18 सितंबर 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने अपना सामान बेचने के लिए रखा और अल्लाह की क़सम खाई कि उसे उस माल के लिए इतनी कीमत दी जाती रही है, (मगर हक़ीक़त में इतनी कीमत पेश नहीं की गई थी) इस पर यह आयत नाज़िल हुई कि जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी क़समों के बदले थोड़ी सी पूंजी लेते हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह (बिन मसऊद) रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो झूठा हो कर इस ग़रज़ से क़सम खाए कि किसी व्यक्ति का या फ़रमाया कि अपने भाई का माल मारे तो वह अल्लाह से ऐसी हालत में मिलेगा कि अल्लाह उससे नाराज़ होगा और अल्लाह अज़्ज़ावजल ने क़ुरआन मजीद में इस बारे में यह आयत नाज़िल की है: वह लोग जो अल्लाह के अहद और अपनी क़समों के बदले थोड़ी सी पूंजी लेते हैं ... उनके लिए दर्दनाक अज़ाब (मुक़द्दर) है।

★ ★ ★

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः मोमिनून सुम्मा अनशा नाहू खल्कन आख़र की तफ़सीर में फ़रमाते हैं:

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलात वस्सलाम ने फ़रमाया है कि मुझे एक रात में चालीस हज़ार अरबी का माद्दा अल्लाह तआला की तरफ़ से सिखाया गया। अब यह वह इंकलाब था जो आप के अंदर पैदा हुआ। लेकिन अगर इस क्रांति को देखते हुए लड़के स्कूल में पढ़ना छोड़ दें और इस इंतज़ार में बैठ जाएँ कि फ़रिश्ता आएगा और साठ हज़ार अरबी का माद्दा उन्हें सिखा देगा तो उन्हें कौन अक़्लमंद समझेगा? क्रांति पैदा नहीं किए जाते बल्कि क्रांति ख़ुद-ब-ख़ुद पैदा होते हैं। लेकिन इरतिक़ा और इन्तक़ाल अनिल हाल इलल हाल आहिस्ता आहिस्ता और मेहनत के साथ होता है। क्रांति लाखों दिनों में किसी एक दिन आता है। बाक़ी सारे दिन इन्तक़ाल के होते हैं। और इंसान एक हालत से दूसरी हालत में बितदरीज कोशिश और मेहनत और कुर्बानी के साथ पहुँचता है। यह

इन्तक़ाल अनिल हाल इलल हाल और क्रमिक प्रगति बदलाव हमेशा नवाफ़िल और ज़िक्र-ए-इलाही और कोशिश और प्रयास के साथ होता है। इंसान जब अपने नफ़्स का अध्ययन करे तो वह सोचेगा कि अगर दूसरा व्यक्ति मुझे गाली दे तो मैं अपने नफ़्स को किस तरह रोकूँगा। वह ज़ुल्म करे तो मैं उसके ज़ुल्म को कैसे बर्दाश्त करूँगा। वह लग़ाव गुफ़्तगू करे तो मैं अपनी ज़बान को किस तरह बंद रखूँगा। और जब वह सोचेगा तो आहिस्ता आहिस्ता उसका नफ़्स कामिल बनता चला जाएगा। अगर उसमें

अस्तग़फ़ार बहुत पढ़ा करो।
इंसान के वास्ते ग़मों से हल्का होने के वास्ते यह तरीक़ा है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

अस्तग़फ़ार कुंजी-ए-तरक्कियात-ए-रूहानी है

एक व्यक्ति ने अपने क़र्ज़ के मुताल्लिक दुआ के वास्ते अर्ज़ की। फ़रमाया:"अस्तग़फ़ार बहुत पढ़ा करो। इंसान के वास्ते ग़मों से हल्का होने के वास्ते यह तरीक़ा है।"एक व्यक्ति को अस्तग़फ़ार की ताकीद करते हुए फ़रमाया कि अस्तग़फ़ार कुंजी-ए-तरक्कियात-ए-रूहानी है।

क़ुरआन शरीफ़ में मसीह मौऊद और उसकी जमाअत का वर्णन

फ़रमाया: "क़ुरआन शरीफ़ में चार सूरतें हैं, जो बहुत पढ़ी जाती हैं। उनमें मसीह मौऊद और उसकी जमाअत का वर्णन है। (1) सूरः फातेहा जो हर रकअत में पढ़ी जाती है। इसमें हमारे दावे का सबूत है। जैसाकि इस तफ़सीर में साबित किया जाएगा। (2) सूरः जुमआ जिसमें आख़िरीना मिनहुम मसीह मौऊद की जमाअत के मुताल्लिक है। यह हर जुमे में पढ़ी जाती है। (3) सूरः कहफ़ जिसके पढ़ने के वास्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ताकीद फ़रमाई है। इसकी पहली और पिछली दस आयतों में दज्जाल का वर्णन है। (4) आख़िरी सूरः क़ुरआन की जिसमें दज्जाल का नाम खन्नास रखा है। यह वही लफ़्ज़ है जो इबरानी तौरेत में दज्जाल के वास्ते आया है। अर्थात नहाश। ऐसा ही क़ुरआन शरीफ़ के और मकामात में भी बहुत वर्णन है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 86, एडिशन 2018, क़ादियान)

अगर इंसान इबादत पर निरंतरता अपनाएँ तो दूसरी नेकियाँ आप ही आप सादिर होने लगती हैं।
मगर इसके यह मानी नहीं कि केवल फ़र्ज़ नमाज़ें पढ़ी जाएँ, तहज्जुद और नवाफ़िल की अदायगी पर भी ज़ोर देना चाहिए।
इसी प्रकार दयानत, अमानत (सत्यनिष्ठा, विश्वस्तता) वचन-पालन, निर्धनों की सेवा तथा पवित्रता का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए

इंकलाब आता तो पहले ही दिन वह तहज्जुद और दूसरे नवाफ़िल पढ़ने लग जाता। वह फ़ौरन हरामखोरी और झूठ से बच जाता। लेकिन ऐसा इसलिए नहीं होता कि उसका बदलाव क्रमिक प्रगति होता है और उसकी तरक़्क़ी कोशिश और प्रयास के साथ वाबस्ता होती है। मगर मैं देखता हूँ कि आम तौर पर इस कोशिश और प्रयास की तरफ कोई तवज्जोह नहीं की जाती जिस की तरफ अल्लाह तआला ने इन आयात में तवज्जोह दिलाई है और इंकलाब के इंतज़ार में लोग बैठे रहते हैं। हालाँकि उनके अंदर जो भी बदलाव पैदा होगा वह क्रमिक प्रगति होगी और उसके लिए कोशिश और प्रयास की ज़रूरत होगी। इस ग़रज़ के लिए बुनियादी तौर पर इस बात की ज़रूरत है कि अल्लाह तआला की ख़लूस के साथ इबादत की जाए और उस पर दवाम इख्तियार किया जाए। अगर इंसान इबादत पर निरंतरता अपनाएँ तो दूसरी नेकियाँ आप ही आप सादिर होने लगती हैं। मगर इसके यह मानी नहीं कि केवल फ़र्ज़ नमाज़ें पढ़ी जाएँ बल्कि जैसा कि बताया जा चुका है तहज्जुद और नवाफ़िल की अदायगी पर भी ज़ोर देना चाहिए। इसी प्रकार दयानत, अमानत (सत्यनिष्ठा, विश्वस्तता) वचन-पालन, निर्धनों की सेवा तथा पवित्रता का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए इन नेकियों में हिस्सा लेने से इंसान इतना तरक़्क़ी कर जाता है कि आख़िर उसे एक नया आध्यात्मिक जीवन हासिल हो जाती है और इंसानियत अपने मेराज-ए-कमाल को पहुँच जाती है।

(तफ़सीर कबीर भाग 6 पृष्ठ 143 से 144, प्रकाशन क़ादियान 2010)

★ ★ ★

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कोई अभियान रवाना किया तो आपने यही हिदायत फ़रमाई कि लड़ाई में जल्दी न करना। धैर्य और कोमलता को धारण किया जाए और मुक़ाबला करने से पहले दाअवत-ए-इस्लाम हो। उसके अहकाम स्पष्ट किए जाएं ता हुज्जत पूरी हो और जहां से अज़ान सुनाई दे वहां हमला न हो।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जब सरिया बनू जज़ीमा में होने वाले घटना का इल्म हुआ तो आपको बहुत दुख हुआ। आपने फ़रमाया कि मैंने ख़ालिद को उन्हें क़त्ल करने का हुक्म नहीं दिया था। मैंने तो केवल उन्हें इस्लाम की तरफ दाअवत देने का कहा था और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने दोनों हाथ उठाए और दो मर्तबा ख़ुदा के हुज़ूर अर्ज़ की: اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَبۡرَأُ اِلَیۡكَ مِمَّا صَنَعَ अल्लाहुम्मा इन्नी अबराउ इलैका मिम्मा सना' खालिद कि हे अल्लाह! ख़ालिद ने जो कुछ किया है मैं तेरे हुज़ूर उससे बेज़ारी का इज़हार करता हूं।

ग़ज़वा-ए-फ़त्ह मक्का के बाद होने वाले बाज़ सराया की रोशनी में सीरत-ए-नबवी का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 15 अगस्त 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले जुमअः में मैंने तीन बड़े बुतों को नष्ट करने के बारे में बताया था। उसकी मज़ीद तफ़्सील इस प्रकार वर्णन हुई है। एक सरिया हज़रत सअद बिन ज़ैद अश्हली का था जो रमज़ान आठ हिजरी में मनात की तरफ भेजा गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चौबीस रमज़ान को हज़रत सअद बिन ज़ैद को मनात बुत के इन्हिदाम के लिए भेजा था। उसे बहिर-ए-अहमर के साहिल पर क़ुदैद के क़रीब मुशल्लल के स्थान पर नस्ब किया गया था। इसी वजह से उसे सरिया मुशल्लल भी कहा जाता है।

(शरह ज़रक़ानी भाग 3 पृष्ठ 490-491 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत) (बुख़ारी किताबुत तफ़्सीर, बाब व मनातुस सालिसतिल उख़रा हदीस 4861)(मिन मआरकिल इस्लामिल फासिला बाशमील भाग 9 पृष्ठ 12 अल-मकतबतुश शामिला)

हज़रत सअद बिन ज़ैद अश्हली बीस सवारों के साथ रवाना हुए। जब आप वहां पहुंचे तो वहां एक मुजाविर भी था। मुजाविर ने हज़रत सअद से पूछा कि तुम क्या चाहते हो? उन्होंने कहा कि मनात का गिराना। उसने कहा कि तुम और यह काम? अर्थात यह नासंभव है कि यह तुमसे हो सके। हज़रत सअद उस बुत की तरफ बढ़े। पता नहीं हक़ीक़त है या बाज़ दफ़ा रंग देने के लिए वर्णन कर देते हैं। बहरहाल, रावी ने वर्णन किया है कि उस वक़्त एक बरहना काले रंग और बिखरे बालों वाली औरत कमरे से बाहर निकली और मुजाविर ने अपने बुत को कहा कि हे मनात! अपना ग़ज़ब भेज। कहते हैं हज़रत सअद बिन अश्हली ने उसे अर्थात उस मुजाविर को क़त्ल कर दिया। अगर यह क़त्ल की रिवायत सही है तो संभव है मुजाविर ने मुक़ाबला की कोशिश की हो और मुक़ाबले में मारा गया। केवल बददुआ देने पर क़त्ल करना यह तो इस्लामी तालीम ही नहीं है। सही भी नहीं लगता। आपकी सभी के लिए हिदायात के भी ख़िलाफ़ है। बहरहाल फिर आप और आपके साथी बुत की तरफ मुतवज्जह हुए और उसे तोड़ दिया। फिर अपने साथियों के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हो गए।

(अत-तबक़ातुल कुबरा भाग 2 पृष्ठ 111, 112 सरियु सअदि ब्नि ज़ैदिल अश्हली इला मनात, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)(शरह ज़रक़ानी भाग 3 पृष्ठ 490, 491 बाब हदमु मनात, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत, 1996 ई.)

इब्ने हिशाम ने लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मनात की तरफ अबू सुफ़्यान बिन हर्ब को रवाना किया था और यह भी कहा जाता है कि यह काम हज़रत अली ने किया था। जबकि, वाकिदी और इब्ने सअद की राय के मुताबिक़ हज़रत सअद बिन ज़ैद ने उसे मस्मार किया था।

(बहवाला अल-लौलौउल मकनून सीरत इनसाइक्लोपीडिया भाग 9 पृष्ठ 208 दारुस्सलाम) और बाक़ी रिवायत भी अगर वाकिदी की है तो हो सकता है उसने बाज़ बातें ज़ाएद भी कर दी हों।

सरिया हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की तरफ नख़्ला।

यह पच्चीस रमज़ान 8 हिजरी/ जनवरी 629 ई. में हुआ। पच्चीस रमज़ानुल मुबारक को नबी अकरम ने तीस अफ़राद पर मुश्तमिल एक दस्ता हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की क़यादत में नख़्ला की तरफ रवाना फ़रमाया ताकि वहां क़ुरैश का प्रसिद्ध बुत जिसका नाम उज़्ज़ा था उसे गिरा दिया जाए। नख़्ला वादी-ए-मक्का के मशरिक की जानिब एक दिन की मसाफ़त पर मक्का और ताइफ़ के दरमियान वाक़े है। यह नख़्ला के मुक़ाम पर एक घर था जिसके निगरान व निगहबान बनू शैबान थे। यह बनू हाशिम के हलीफ़ थे। यहां उज़्ज़ा क़ुरैश का सबसे बड़ा बुत था। इमाम बैहक़ी ने रिवायत किया है कि उसका घर तीन कीकर के दरख़्तों पर मुश्तमिल था। अर्थात इर्द-गिर्द उसके कीकर के दरख़्त लगे हुए थे, बीच में घर था। इब्ने इसहाक

कहते हैं कि जब उज़्ज़ा के मुजाविर को हज़रत ख़ालिद की आमद का इल्म हुआ तो वह बुत पर तलवार लटका कर ख़ुद पहाड़ पर चढ़ गया और यह शेर पढ़ने लगा। जिसका तर्जुमा यह है कि हे उज़्ज़ा! ख़ालिद पर ऐसा शदीद हमला कर जो कुछ भी बाक़ी न छोड़े। जंगी नक़ाब पहन और आस्तीन चढ़ा। हे उज़्ज़ा! अगर तुम इस व्यक्ति ख़ालिद को क़त्ल न भी करो तो उसे जल्द वाक़े होने वाले गुनाह का मुस्तहिक़ बनाओ या उससे उसका इन्तिक़ाम लो। हज़रत ख़ालिद ने नख़्ला पहुंचते ही कीकर के दरख़्तों को काटा और उस घर को मस्मार किया जिसमें उज़्ज़ा बुत था। फिर वापस मक्का आ कर आपकी खिदमत में रिपोर्ट पेश की। आपने फ़रमाया क्या तुमने वहां कोई ख़ास चीज़ देखी थी। हज़रत ख़ालिद ने नफ़ी में उत्तर दिया। आपने फ़रमाया: फिर तो तुमने उज़्ज़ा को ख़त्म नहीं किया। वापस जाओ और उसका क़लअ क़लअ कर के आओ। इस हुक्म के सुनते ही हज़रत ख़ालिद तामील-ए-हुक्म के लिए फ़ौरन पलटे। जब निगरानों ने दोबारा हज़रत ख़ालिद को देखा तो वह पहाड़ पर चढ़ गए। वह कह रहे थे कि हे उज़्ज़ा! उन्हें हलाक कर दे। उस बुतखाने में से एक बिखरे बालों वाली सियाह रंग (यहां भी उन्होंने औरतें रखी होंगी) वह निकली और हज़रत ख़ालिद उस वक़्त यह शेर पढ़ रहे थे। वह शेर अरबी में यह था।

या उज़्शा कुफ़्रानका ला सुब्हानक
इन्नी रअयतुल्लाह क़द अहानक

ऐ उज़्ज़ा! मैं तेरा इन्कार करता हूं। तेरी पाकीज़गी वर्णन नहीं करता। मैंने देखा है कि अल्लाह ने तुझे रुस्वा कर दिया। उसके बाद आपने वापस पहुंच कर आपकी खिदमत में यह रवायदाद पेश की तो आपने फ़रमाया। नअम, तिल्कल उज़्ज़ा, व क़द यइसत अन तुअबद बि बिलादिकुम अबदां। हां यह वह उज़्ज़ा है जो निराश हो गई है कि तुम्हारे शहरों में उसकी अब कोई भी परस्तिश न होगी।

(अस-सीरतुन नबविया लि इब्ने हिशाम पृष्ठ 760-761 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत) (फ़रहंग-ए-सीरत सय्यद फ़ज़लुर्रहमान पृष्ठ 299 ज़व्वार अकादमी कराची)(शरह ज़रक़ानी भाग 3 पृष्ठ 487 ता 490 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)(अल-लौलौउल मकनून सीरत इनसाइक्लोपीडिया भाग 9 पृष्ठ 203 ता 208 दारुस्सलाम)

फिर सरिया हज़रत अम्र बिन आस की तरफ सुवा का वर्णन है। यह भी रमज़ान

आठ हिजरी में हुआ। उज़्ज़ा बुत के इन्हिदाम की मुहिम के साथ ही रसूलुल्लाह ने हज़रत अम्र बिन आस को सुवा बुत के क़लअ क़लअ की ख़ातिर भिजवाया। आपके साथ कुछ साथी भी थे मगर उनकी संख्या वर्णित नहीं।

(अत-तबक़ातुल कुबरा लि इब्ने सअद, सरियु अम्रि ब्निल आस इला सुवा, भाग 2 पृष्ठ 111 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)(शरहुल अल्लामा अज़-ज़रक़ानी अला अल-मवाहिबिल लदुन्निया भाग 3 पृष्ठ 490 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

सवा मदीना से मग़रिबी जानिब साहिल-ए-समंदर पर रुहात में बनी हुज़ैल का बुत था और यह जगह मक्का से तीन मील की मसाफ़त पर थी। इस बुत की शक्ल एक औरत की थी और लोग उसकी तअज़्ज़ुम के साथ साथ उसका तवाफ़ भी करते थे। उसके मुजाविर बनू लहयान थे जो हुज़ैल ही की एक शाख़ा है।

(फ़रहंग-ए-सीरत पृष्ठ 136 ज़व्वार अकादमी कराची) (शरहुल अल्लामा अज़-ज़रक़ानी अला अल-मवाहिबिल लदुन्निया भाग 3 पृष्ठ 490 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)(अल-लौलौउल मकनून सीरत इनसाइक्लोपीडिया भाग 9 पृष्ठ 210 दारुस्सलाम)

क़ुरआन-ए-करीम में कुछ बुतों का नाम ले कर वर्णन किया गया है उसमें इस बुत का भी वर्णन है। चुनांचे सूरत नूह में आता है: व क़ालू ला तज़रुन्ना आलिहतकुम व ला तज़रुन्ना वद्दन व ला सुवाअन व ला यगूस व यउक़ व नसरा (नूह:24) और उन्होंने कहा हरगिज़ अपने माबूदों को न छोड़ो और न वद्द को छोड़ो और न सुवा को और न ही यगूस और यउक़ और नसर को।

हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि वह बुत जो कि क़ौम-ए-नूह में थे वह बाद में अरबों में आ गए और वद्द जो बुत था वह कल्ब क़बीले का था जो दौमतुल जंदल में आबाद था और जो सुवा था वह हुज़ैल क़बीले का था और यगूस मुराद क़बीले का था। फिर वह बनू ग़ुतैफ़ का हो गया जो सबा शहर के पास जुरुफ़ में रहता था और जो यउक़ था वह हमदान क़बीले का था और जो नसर था वह हिमयर का था जो ज़िल कलाअ की औलाद थी। दरअस्ल यह सब उन चंद नेक आदमियों के नाम हैं जो हज़रत नूह की क़ौम में से थे। जब वह मर गए तो शैतान ने उनकी क़ौम के दिल में यह डाला कि उन जगहों में जहां वह बैठा करते थे बुत खड़े कर दो और उनके नामों पर उनके नाम रखो। चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया। उन आदमियों को नहीं पूजा जाता था मगर जब वह हलाक हो गए और अस्ल मालूमात न रहीं तो उन बुतों को पूजना शुरू कर दिया या उनके नमूने बना के, उनके नाम बना के पूजना शुरू कर दिया।

(सहीह बुख़ारी किताबुत तफ़्सीर बाब वद्दन व ला सुवाअन... हदीस 4920, अनुवादक हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली उल्लाह शाह साहिब, भाग 12, पृष्ठ 293, 294)

हज़रत अम्र बिन आस जब रुहात के मुक़ाम पर सुवा के पास पहुंचे तो वहां उन्हें उसका मुजाविर मिला। आपने उसे कहा कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुक्म से उस बुत को तोड़ने के लिए आए हैं। उसने उत्तर दिया कि तुम उसे तोड़ने पर हरगिज़ क़ादिर नहीं होगे। आपने वजह पूछी तो उसने उत्तर दिया कि तुम बहरहाल रोक दिए जाओगे। आपने कहा तुम पर अफ़सोस। क्या यह सुन सकता है और देख सकता है? फिर आपने आगे बढ़ कर उसे तोड़ दिया और अपने साथियों से कहा कि वह उस कोठरी को भी ध्वस्त कर दें जो उसके साथ बनी हुई थी। उन्होंने उसे भी मस्मार कर दिया। फिर आपने उस मुजाविर से पूछा अब बताओ? उसने अपने माबूद का यह हाल देखा तो फ़ौरन बोल उठा। मैं अल्लाह की इताअत करता हूं और इस्लाम क़बूल करता हूं।

(अत-तबक़ातुल कुबरा जुज़ 2 पृष्ठ 111 बाब सरियु अम्रि ब्निल आस इला सुवा, दार इहयाउत तुरासिल अरबी बैरूत)(शरहुल अल्लामा अज़-ज़रक़ानी भाग 3 पृष्ठ 490 बाब हदमु मनात, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1996 ई.)(अल-लौलौउल मकनून सीरत इनसाइक्लोपीडिया भाग 9 पृष्ठ 210 दारुस्सलाम)

इस हवाले से भी इस बात की तस्दीक़ होती है कि पहले मुजाविर को या किसी को क़त्ल करने का जो क़िस्सा वर्णन हुआ है वह बहरहाल महल-ए-नज़र है।

सरिया हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की तरफ बनू जज़ीमा यह भी शव्वाल 8 हिजरी का है। फ़त्ह-ए-मक्का के बाद जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद उज़्ज़ा बुत को गिरा कर वापस तशरीफ़ लाए तो आपने बनू जज़ीमा की तरफ भेजा। यह क़बीला बनू किनाना की शाख़ा था जो मक्का के क़रीब यलमलम की जानिब आबाद था। नबी अकरम ने हज़रत ख़ालिद को फ़रमाया: इस क़बीले को इस्लाम की दाअवत दें और आपने यह भी फ़रमाया कि उनसे जंग नहीं करनी। यह आपका उसूली इरशाद हमेशा से था और यह हमेशा याद रखना चाहिए कि जंग नहीं करनी। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद मुहाजेरीन व अन्सार और बनू सुलैम के तीन सौ पचास आदमियों के साथ रवाना हुए।

(अत-तबक़ातुल कुबरा लि इब्ने सअद भाग 2 पृष्ठ 112 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

जब हज़रत ख़ालिद वहां पहुंचे तो उन्होंने देखा कि लोग हथियार उठाए हुए हैं जैसा कि हमला आवर हों। हज़रत ख़ालिद ने उन लोगों से कहा कि हथियार रख दो। लोग तो इस्लाम क़बूल कर चुके हैं। ख़ालिद की यह बात सुन कर उनमें से एक व्यक्ति जहदम नाम का खड़ा हुआ और अपनी क़ौम को मुख़ातिब करते हुए कहा कि हे बनू जज़ीमा! हथियार न रखना। यह ख़ालिद है। हथियार रखने के बाद तुम लोगों को गिरफ़्तारी और मौत का सामना करना होगा इसलिए मैं तो हथियार नहीं रखूंगा। इस पर बाक़ी लोगों ने जहदम को समझाया कि क्यों तुम हमारा ख़ून करवाने पर तले हुए हो। हथियार रख दो। और लोग उसको समझाते रहे यहां तक कि उससे हथियार ले लिए। हथियार फेंक देने के बाद उन लोगों को क़ैद कर लिया गया। यह भी रिवायत में है। और हर मुसलमान को एक एक दो दो क़ैदी दिए गए और रात भर यह क़ैद में रहे।

(अस-सीरतुन नबविया लि इब्ने हिशाम पृष्ठ 755 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)(सीरत इनसाइक्लोपीडिया भाग 9 पृष्ठ 215 दारुस्सलाम)

शायद इसलिए क़ैद किया कि उन्होंने हथियार उठाए हुए थे और उनकी नीयत का पता नहीं था। बहरहाल एक रिवायत के मुताबिक़ जब हज़रत ख़ालिद वहां पहुंचे और उन्हें इस्लाम की दाअवत दी तो उन लोगों ने असलमना कहने की बजाय यह कहना शुरू किया कि सबअना सबअना कि हमने दीन छोड़ दिया। हमने अपना दीन छोड़ दिया। इस पर हज़रत ख़ालिद को यह ग़लतफ़हमी हुई कि यह तो मुसलमान नहीं हैं। चुनांचे उन्होंने उनके क़त्ल का फ़तवा दे दिया। (सही बुख़ारी किताबुल मग़ाजी बाब बअसिन नबिय्यु ख़ालिद बिनिल वलीद... रिवायत 4339) यह तअवील पेश की जाती है।

इब्ने सअद ने वर्णन किया कि जब ख़ालिद उनके पास पहुंचे तो उन्होंने लोगों से पूछा कि तुम किस दीन पर हो? उन्होंने उत्तर दिया कि हम मुसलमान हैं, नमाज़ पढ़ते हैं वग़ैरह। हज़रत ख़ालिद ने पूछा कि फिर तुमने हथियार क्यों उठा रखे हैं? वह बोले कि हमारे और अरब की एक क़ौम के दरमियान दुश्मनी चली आ रही है। हमें अंदेशा हुआ कि यह वही दुश्मन क़ौम है इसलिए हथियार पकड़ लिए।

(अत-तबक़ातुल कुबरा लि इब्ने सअद भाग 2 पृष्ठ 112 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

अगर इसकी कोई तौजीह देनी भी है तो इस कैफ़ियत से मालूम होता है कि हज़रत ख़ालिद मुहतात हो गए और उनके दिल में उनके विषय में कुछ शकूक व शुबहात पैदा हो गए। बहरहाल रिवायात से मालूम होता है कि यह क़ैदी नमाज़ भी पढ़ते थे और मुसलमान भी दिखाई देते थे लेकिन ऐन संभव है कि उन क़ैदियों में से कुछ क़ैदी ऐसे होंगे जैसे ख़ुद जहदम और उसकी हां में हां मिलाने वाले जो सरकशी का मुज़ाहिरा करने वाले थे और हज़रत ख़ालिद उनकी तरफ से मुतमइन नहीं हो रहे थे और कुछ सबअना सबअना कहने ने हज़रत ख़ालिद को चौकन्ना कर दिया। इसलिए उन्होंने एक रात के आख़िरी पहर में यह फ़तवा दे दिया कि उन क़ैदियों को क़त्ल करना ही मुनासिब मालूम होता है। इस पर कुछ मुसलमानों ने अपने क़ैदियों को क़त्ल कर दिया लेकिन मुहाजेरीन और अन्सार के गिरोह ने जो पुराने मुसलमान थे उन्होंने ख़ालिद की इस राय से इत्तिफ़ाक़ नहीं किया और अपने क़ैदियों को क़त्ल नहीं किया। अन्सार के सरदार अबू उसैद साअदी हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के पास गए और उन्हें बताया कि यह मुसलमान हैं। उनको क़त्ल करना दुरुस्त नहीं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ा ने भी हज़रत ख़ालिद की राय से इत्तिफ़ाक़ न किया और अपने दूसरे साथियों को अपने अपने क़ैदी क़त्ल करने से मना किया। इन रिहा होने वाले क़ैदियों में से एक क़ैदी ने मदीना पहुंच कर रसूल करीम की खिदमत में सूरः हाल वर्णन की तो आपने पूछा कि किसी ने ख़ालिद की बात से मतभेद नहीं किया या रोका नहीं? उसने बताया कि एक सफ़ेद रंगत वाला मध्य क़द का व्यक्ति था और एक लंबे क़द का व्यक्ति था और उन दोनों ने ख़ालिद से बात की थी और एक ने ज़रा तेज़ लहजे में बात की थी। हज़रत उमर उस वक़्त मजलिस में मौजूद थे। उन्होंने रसूलुल्लाह की खिदमत में अर्ज़ की कि हुज़ूर एक तो मेरा बेटा अब्दुल्लाह था अर्थात हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर लंबे क़द के और दूसरा सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ा था।

(उद्धृत मिन अल-लौलौउल मकनून सीरत इनसाइक्लोपीडिया भाग 9 पृष्ठ 215 ता 217 दारुस्सलाम)(उद्धृत मिन अस-सीरतुन नबविया लि इब्ने हिशाम पृष्ठ 756 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

आपको जब इस सारे घटना का इल्म हुआ तो आपको बहुत दुख हुआ। आपने फ़रमाया कि मैंने ख़ालिद को उन्हें क़त्ल करने का हुक्म नहीं दिया था। मैंने तो केवल उन्हें इस्लाम की तरफ दाअवत देने का कहा था और फिर आपने अपने दोनों हाथ उठाए और दो मर्तबा ख़ुदा के हुज़ूर अर्ज़ की: अल्लाहुम्मा इन्नी अबराउ इलैका मिम्मा सना' खालिद कि हे अल्लाह! ख़ालिद ने जो कुछ किया है मैं तेरे हुज़ूर उससे बेज़ारी का इज़हार करता हूं। इसी तरह आपने ख़ालिद बिन वलीद से नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया कि क्यों इतनी जल्दबाज़ी से काम लिया गया। अच्छी तरह तहक़ीक़ करनी

चाहिए थी।

(उद्धृत मिन अल-लौलौउल मकनून सीरत इनसाइक्लोपीडिया भाग 9 पृष्ठ 217 दारुस्सलाम)

(सहीह बुख़ारी किताबुल मग़ाजी बाब बअसिन नबिय्यु ख़ालिद... हदीस: 4339)

फिर आपने हज़रत अली को बनू जज़ीमा की तरफ उनके मक़तूलीन की दियत अदा करने और सारे मामले की तहक़ीक़ करने के लिए भेजा। हज़रत अली ने वहां जा कर तमाम मक़तूलीन के वारिसों को ख़ून बहा अदा किया और उनके जो अम्वाल मुसलमानों ने लिए थे वह सब उन्हें वापस दिए यहां तक कि लकड़ी का वह बरतन भी वापस किया जिसमें कुत्ता पानी पीता था। सब को दियत वग़ैरह की रक़ूम देने के बाद हज़रत अली के पास कुछ माल बच गया तो आपने बनू जज़ीमा के लोगों से पूछा कि कोई ऐसा व्यक्ति रह गया हो जिसके किसी नुक़सान का इज़ाला न हुआ हो। सब ने कहा कि नहीं। फिर हज़रत अली ने उस पर बचा हुआ माल भी उन्हीं लोगों को दे दिया और कहा कि मैं यह माल रसूलुल्लाह की तरफ से बतौर एहतियात दे रहा हूं ता कि इस संभवा नुक़सान का भी इज़ाला हो जाए जिसे न अल्लाह का रसूल जानता है और न तुम जानते हो। हज़रत अली वापस तशरीफ़ लाए और आपकी खिदमत में सारी रिपोर्ट पेश की और यह भी बताया कि उनकी छोटी से छोटी चीज़ भी उन को लौटा दी गई है और बाक़ी बचा हुआ माल भी उन को दे दिया है तो इस पर नबी करीम बहुत ख़ुश हुए और हज़रत अली से फ़रमाया: असब्त व अहसनत। तूने बिल्कुल ठीक किया और बहुत अच्छा किया। इस घटना से पहले आपने एक ख़्वाब भी देखा था जिसका सीरत इब्ने हिशाम में वर्णन है। आपने फ़रमाया कि मैंने एक ख़्वाब देखा कि मैंने हैस जो खजूर पनीर और घी से मिला हुआ एक खाना है। उसका एक लक़्म लिया तो मुझे उसका ज़ाइक़ा लज़ीज़ लगा लेकिन जब मैंने उस को निगला तो उसका कुछ हिस्सा मेरे हलक में फंस गया। फिर अली ने हाथ डाल कर उस को निकाला। हज़रत अबू बकर ने उसकी तअबीर करते हुए अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! यह आपके भेजे हुए सराया में से एक सरिया है जिसे आप रवाना करेंगे। उसकी कुछ चीज़ें तो आप को पसंद आईं गी और कुछ क़ाबिल-ए-इतिराज़ होंगी। फिर आप अली को रवाना करेंगे और वह उसमें आसानी कर देंगे अर्थात मामला को दुरुस्त कर देंगे।

(अस-सीरतुन नबविया लि इब्ने हिशाम पृष्ठ 756 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)(सही मुस्लिम अनुवादक वहीदुज़्ज़मान भाग 3 पृष्ठ 152)

चुनांचे इस सरिया के घटना से यह ख़्वाब पूरा हो गया। बुख़ारी के शारह हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली उल्लाह शाह साहिब जो जमाअत के प्रसिद्ध बुज़ुर्ग भी हैं। उन्होंने बुख़ारी की शरह लिखी है। इस सारे घटना और

रिवायात का तज्ज़िया करते हुए वह लिखते हैं कि तबक़ात इब्ने सअद और सीरत इब्ने हिशाम दोनों में इस मुहिम का वर्णन है कि फ़त्ह-ए-मक्का के बाद नबी करीम ने मुख़्तलिफ़ अतराफ में कुछ दस्ते भेजे ता कि असंख्य क़बाइल की तरफ से उनकी इस्लाम की तरफ रग़बत मालूम की जाए। यह नहीं कि ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया जाए। चुनांचे आपका हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को बनू जज़ीमा की तरफ भिजवाना भी इसी ग़र्ज़ से था। तबक़ात इब्ने सअद में इस अम्र की उन अल्फ़ाज़ से सराहत है कि बअसहु इला बनी जज़ीमत दाईयन इलल इस्लाम व लम यबउसहु मुक़ातिलन कि अर्थात नबी करीम ने साढ़े तीन सौ मुहाजेरीन और अन्सार के साथ हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को शव्वाल आठ हिजरी में बनू किनाना के क़बीले बनू जज़ीमा के पास भेजा जो मक्का के क़रीब यलमलम के अतराफ में आबाद था और उन्हें वहां लड़ने के लिए नहीं बल्कि दाअवत-ए-इस्लाम की ग़र्ज़ से भेजा था। यह क़बीला इस्लाम की तरफ रागिब था। इस मुहिम का नाम यौमुल ग़ुमैसा भी है। ग़ुमैसा से मुराद चश्मे से निकलने वाला पानी है। मक्का श्रीमाना के क़रीब बादिया में यह एक मुक़ाम था जहां बनू जज़ीमा रहते थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर जो इस रिवायत के रावी हैं इस मुहिम में मौजूद थे। उनके वर्णन में इख़्तिसार है। इब्ने इसहाक़ ने घटना की तफ़्सील वर्णन की है। इस से मालूम होता है कि बनू जज़ीमा के एक मख़्सूस हिस्से ने इस्लाम क़बूल करने से इन्कार किया और अक्सर मुसलमान हो चुके थे। मुनकिरीन-ए-इस्लाम मुसल्लह हो कर लड़ने लगे जिस की वजह से

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ने उनका मुक़ाबला किया और पराजय होने पर वह क़ैद किए गए। उन में से बाज़ अपने आप को नरगे में देख कर सबअना सबअना के अल्फ़ाज़ से अपने इस्लाम का इज़हार करने लगे। सबअना के मआनी हैं हम साबी हो गए अर्थात अपना दीन तब्दील कर लिया। आप मक्का श्रीमाना में लफ़्ज़ साबी से तानाज़न पुकारे जाते थे और लोगों को इस लफ़्ज़ से नफ़रत दिलाई जाती थी कि उन्होंने अपना दीन बदल लिया है। बहरहाल लड़ने वालों ने स्पष्ट तौर पर और इनशिराह से इस्लाम क़बूल करने का इज़हार नहीं किया था बल्कि वह सबअना का लफ़्ज़ इस्तेमाल करने लगे। इस फ़िकरे से वह अपने आप को लड़ाई में क़त्ल से बचा न सके। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर का वर्णन है कि उन्होंने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के संदेश पर अपने क़ैदी क़त्ल नहीं किए और आप से इस घटना का वर्णन किया जिस पर आप ने हाथ उठाए और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद से बेज़ारी और नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया। इब्ने इसहाक़ और इब्ने सअद के वर्णन में है कि मुजाहिदीन में बनू सुलैम और मुदलज क़बीले के जंगजू भी शामिल थे जो बनू जज़ीमा की तरह बनू किनाना की एक शाख़ा थे और जज़ीमा को इस से पहले किसी जंग में नुक़सान पहुंचा चुके थे। जब बनू जज़ीमा ने बनू सुलैम और मुदलज को मुजाहिदीन-ए-इस्लाम के लश्कर के साथ देखा तो वह उन से मुक़ाबला करने के लिए मुसल्लह हो गए। हज़रत ख़ालिद ने उन से कहा कि लोग मुसलमान हो चुके हैं तो यह लड़ाई किस लिए? हथियार डाल दो। जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है। जहदम नामी सरदार ने उन्हें मशवरा दिया कि हथियार न डालो वरना क़त्ल व क़ैद होगे। क़ौम के बाज़ लोगों ने उसे रोका और कहा कि ख़ूनरेज़ी क्यों कराते हो। लोग तो मुसलमान हो चुके हैं। इब्ने हिशाम की रिवायत से पाया जाता है कि इन क़बाइल बनी किनाना के दरमियान बाज़ ख़ूनरेज़ियों के इन्तिक़ाम का प्रश्न भी था जिस की वजह से बाज़ लड़े और मारे और क़ैद किए गए। मालूम होता है कि बनू सुलैम के जंगजू लोगों ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के फ़तवे पर अपने बाज़ क़ैदी किसी दीरीना इन्तिक़ाम में क़त्ल कर दिए और उनके इज़हार-ए-इस्लाम को निफ़ाक़ पर महमूल किया लेकिन मुहाजेरीन और अन्सार ने ख़ालिद का यह फ़तवा क़बूल नहीं किया और अपने क़ैदी ऊपर वर्णित अल्फ़ाज़ से इज़हार-ए-इस्लाम पर आज़ाद कर दिए। उन्होंने क़त्ल करने की बजाय उन्हें आज़ाद कर दिया। आपका फ़तवा स्पष्ट है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के वर्णन मुन्दरिजा रिवायत से भी ज़ाहिर है कि असीरों के क़त्ल करने के विषय में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद का हुक्म न था बल्कि एक फ़तवा था जिस से सहाबा किराम की अक्सरियत ने इत्तिफ़ाक़ नहीं किया। अगर हुक्म होता तो सब उस को मानते और कोई उस से मतभेद न करता लेकिन फ़तवा देने में हज़रत ख़ालिद से बाज़ वजूहात से ग़लती हुई और आप को ख़ालिद की इस मज़कूरह ग़लती से शदीद सदमा हुआ और आप ने उस की तालाफ़ी के लिए हज़रत अली को भेजा जिन्होंने जा कर एक एक बच्चे का ख़ून बहा अदा किया यहां तक कि जिन के कुत्ते भी मारे गए थे उन के कुत्तों का भी ख़ून बहा दिया गया। सीरत इब्ने हिशाम में यह लिखा है और इलावा-ए-वाजिबी दियत के उन को मज़ीद रक़म भी दी। इमाम बाक़िर ने भी हज़रत अली के माध्यम से तालाफ़ी-ए-नुक़सान करने का वर्णन किया है कि हज़रत ख़ालिद लड़ाई में उन्हें क़त्ल और क़ैद करने लगे। इस से मुराद यह नहीं थी कि हथियार डालने पर भी उन्हें क़त्ल करने लगे। इब्ने सअद ने इस तअल्लुक़ में जो रिवायतें नक़्ल की हैं उन में से एक रिवायत बहवाला इब्ने इसहाक़ हज़रत इब्ने अबी हदरद असलमी की है वह इस रिसाले में, इस फ़ौज में मौजूद थे। इब्ने सअद के वर्णन से ज़ाहिर है कि बाज़ ने लड़ाई की और यह वर्णन भी है कि बनू जज़ीमा को मुसल्लह देख कर हज़रत ख़ालिद ने उन से दरयाफ़्त किया। मा बालुस सिलाहि अलैकुम? क्या बात है तुम हथियार उठाए हुए हो? उन्होंने कहा कि हमारे दरमियान और बाज़ अरब क़बाइल के दरमियान पुरानी दुश्मनी है सो हम इस बात से डरे कि तुम वही लोग हो इसलिए हम हथियार बंद हो गए। हज़रत ख़ालिद ने उन्हें क़ैद करने के लिए हुक्म दिया। उनके बाज़ू जकड़े गए और उन्हें अपने साथियों में तक़्सीम कर दिया।

इमाम इब्ने हजर ने यह हवाला नक़्ल कर के लिखा है कि लड़ने वालों ने लड़ाई के बाद अपने आप को सुपर्द किया। इमाम बुख़ारी की रिवायत में इख़्तिसार है और किताब मग़ाजी की रिवायत में जो वाक़िआत वर्णन हुए हैं उन में भी स्पष्ट इरतिबात नहीं है जबकि इस से मजमूअन मालूम होता है कि जो झड़प इस तबलीग़ी मुहिम के दौरान हुई है उसमें ज़माना-ए-जाहेलियत की किसी ख़ूनरेज़ी का दख़्ल ज़रूर था। महज़ लफ़्ज़ सबअना से विषय में मतभेद-ए-राय पर बाज़ क़ैदियों को क़त्ल किया जाना बअईद अज़ अक़्ल है ख़ुसूसन जब मुहाजेरीन व अन्सार बरमला फ़तवा ऊपर वर्णित के ख़िलाफ़ थे। ख़त्ताबी कहते हैं कि नबी करीम के इस फ़िकरे से कि अल्लाहुम्मा इन्नी अबराउ इलैका मिम्मा सना' खालिद ज़ाहिर है कि आप ने फ़ैसले में हज़रत ख़ालिद की जल्दबाज़ी और लफ़्ज़ सबअना से संबंधित अदम-ए-तहक़ीक़ को बुरा माना। हज़रत ख़ालिद का फ़र्ज़ था कि वह पूरी तरह मालूम कर लेते कि लफ़्ज़ सबअना कहने वालों की इस से क्या मुराद है।

इमाम बाक़िर की रिवायत में है कि आप ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और उन से फ़रमाया कि उन लोगों के पास जाएं और जाहेलियत की बात अपने क़दमों में मसल दें। चुनांचे वह गए और उन्होंने एक एक की दियत दी। इस रिवायत से ज़ाहिर है कि दीरीना कीना व बग़्ज़ व इन्तिक़ाम वाक़िया-ए-क़िताल के पीछे कार

फ़र्मा था जो आप ने कहा कि माज़ी की बातों को मसल दो तो आप को पता लग गया था कि कोई पुराना कीना है उन के दिलों में और वही क़त्ल की वजह बना है।

आप ने जब कोई मुहिम रवाना फ़रमाई उसे यही हिदायत फ़रमाई कि लड़ाई में जल्दी न करना। धैर्य और कोमलता को धारण किया जाए और मुक़ाबला करने से पहले दाअवत-ए-इस्लाम हो। उस के अहकाम स्पष्ट किए जाएं ता हुज्जत पूरी हो और जहां से अज़ान सुनाई दे वहां हमला न हो।

ऊपर वर्णित घटना में ख़ुद क़बीला बनू जज़ीमा की तरफ से इस्लाम क़बूल करने का पैग़ाम पहुंचा था जिस पर ऊपर वर्णित मुहिम इस सराहत के साथ रवाना की गई कि इस से मक़्सूद दाअवत-ए-इस्लाम है लड़ाई नहीं। चुनांचे तबक़ात इब्ने सअद में है कि जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद बनू जज़ीमा के पास पहुंचे तो उन्होंने उन से दरयाफ़्त किया कि तुम कौन हो? उन्होंने कहा मुसलमान। हम नमाज़ पढ़ते हैं और मुहम्मद को सच्चा माना है। अपने आंगनों में मस्जिदें बनाई हैं और उन में अज़ानें दी हैं। हज़रत ख़ालिद ने पूछा। फिर यह हथियार कैसे? उन्होंने कहा हमारे और अरबों की एक और क़ौम के दरमियान अदाअवत है हमें अंदेशा हुआ कि तुम लोग वही न हो। ऊपर वर्णित वज़ाहत के बाद उन के साथ जंग किसी सूरत में जाएज़ नहीं थी। मालूम होता है कि यलमलम के अतराफ में क़ियाम के अस्ना क़दीमी अदाअवत की चिंगारी सलगी है जिस से एक फ़रीक़ के साथ लड़ाई की सूरत पैदा हुई और उस के बाद जंगजू अफ़राद की तरफ से सबअना से इज़हार-ए-इस्लाम करने पर उन की जान बख़्शी नहीं हुई और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद अमीर-ए-जैश (जो अमीर-ए-लश्कर थे) होने की वजह से ज़ेर-ए-अताब आए। इब्ने हिशाम ने हज़रत ख़ालिद और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ के मतभेद और आपस की नाराज़गी का भी वर्णन किया है जो इस मौक़ा पर दोनों के दरमियान हुई। हज़रत अब्दुर्रहमान ने उन से कहा। अमिलता बि अम्रिल जाहेलियति फिल इस्लाम कि आप ने इस्लाम में जाहेलियत वाली बात की है तो हज़रत ख़ालिद ने उन्हें उत्तर दिया। इन्नमा सअरता बि अबीक। तू ने मुझे यह बात कह के अपने बाप का इन्तिक़ाम लिया है। हज़रत अब्दुर्रहमान ने उत्तर दिया यह दुरुस्त नहीं क्योंकि मैं अपने बाप के क़ातिल को मार कर बदला ले चुका हूं लेकिन आप ने अपने चाचा फ़ाकिह बिन मुग़ीरा का बदला लिया है। इस झगड़े से दोनों एक दूसरे से बिगड़े यहां तक कि रसूलुल्लाह को इस नाराज़गी का इल्म हुआ तो आप ने ख़ालिद से फ़रमाया: मेरे सहाबा से विषय में ऐसा ख़्याल न करो। बख़्शा! (यह जो इब्तिदाई सहाबा थे) अगर उहुद जितना सोना भी तुम्हें मिल जाता और वह अल्लाह की राह में ख़र्च कर दो तो भी मेरे सहाबा में किसी व्यक्ति का मक़ाम नहीं पा सकते जो उन्हें सुबह व शाम ज़िक्र-ए-इलाही से हासिल होता है।

सीरत इब्ने हिशाम में इब्ने इसहाक़ की यह रिवायत भी मौजूद है और उसमें वर्णन है कि फ़ाकिह बिन मुग़ीरा मख़्ज़ूमी, औफ़ बिन अब्दि औफ़ जुहरी और अफ़्फ़ान बिन अबिल आस यमन की तरफ तिजारत की ग़र्ज़ से गए और वापसी पर एक जज़ीमी व्यक्ति का माल जो यमन में मर गया था लाए ता उस के वारिसों को दिया जाए। बनू जज़ीमा का एक व्यक्ति ख़ालिद बिन हिशाम रास्ते में उन से मिला और जब उसे जज़ीमी व्यक्ति की मौत का इल्म हुआ तो उस ने कहा कि वह उस माल का हक़दार है। उन्होंने देने से इन्कार किया। इस पर आपस में लड़ाई हो गई और लड़ाई में औफ़ बिन अब्दि औफ़ और फ़ाकिह बिन मुग़ीरा दोनों मारे गए और अफ़्फ़ान बिन अबिल आस और उन का बेटा उस्मान बच निकले और उन्होंने फ़ाकिह बिन मुग़ीरा और औफ़ बिन अब्दि औफ़ का माल ले लिया और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने मौक़ा पा कर ख़ालिद बिन हिशाम को क़त्ल कर के अपने बाप औफ़ का इन्तिक़ाम ले लिया। क़ुरैश भी इस घटना से सख़्त तैश में थे और उन्होंने क़बीला बनू जज़ीमा पर हमला कर के अपने मक़तूलीन और माली नुक़सान का बदला लेना चाहा तो बनू जज़ीमा ने कहा कि तुम्हारे आदमियों का क़त्ल एक इन्फ़िरादी वाक़िया है। इस में हमारे इरादे का दख़्ल नहीं और हमें उन का इल्म नहीं था। हम मक़तूलीन और माली नुक़सान का मुआवज़ा दे देंगे। क़ुरैश ने उन की मुआज़िरत और तजवीज़ क़बूल कर ली। यह सीरत इब्ने हिशाम में मरवी है।

बहरहाल यह वाक़िआत हैं जो पीछे का कारण है बाज़ चीज़ों का कि क्यों दुश्मनियां थीं। दुश्मनियों की वजह बनने में यह भी एक वाक़िया इस में लिखा है और घटना का यह पीछे का कारण है जिस की वजह से हज़रत ख़ालिद बिन वलीद महल-ए-इतिराज़ बने और सहाबा इसी वजह से हज़रत ख़ालिद के फ़ैसले के विषय में मुतमइन न थे। बहरहाल हज़रत ख़ालिद की तरफ से किसी क़िस्म का उज़्र बनाया नहीं जा सकता क्योंकि वह केवल दाअवत-ए-इस्लाम की ग़र्ज़ से भेजे गए थे जिस में किसी क़िस्म का जबर जाएज़ नहीं था और सहाबा किराम की अक्सरियत ने उन्हें नेक मशवरा दिया था और जो क़बूल नहीं हुआ और बनू सुलैम को रातों रात अपने क़ैदी क़त्ल करने का मौक़ा मिल गया।

इब्ने इसहाक़ की एक रिवायत में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद का यह उज़्र नक़्ल किया गया है कि उन्होंने इस्लाम क़बूल करने में लोगों का इन्कार देख कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी के मशवरे पर उन से जंग की। इस बारे में इब्ने इसहाक़ के यह अल्फ़ाज़ हैं कि बाज़ लोग जो हज़रत ख़ालिद को इस क़त्ल करने से माउज़र ठहराते हैं उन का वर्णन है कि अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी ने आप से कहा था कि रसूलुल्लाह ने तुम्हें उन लोगों को क़त्ल करने का हुक्म दिया था अगर यह इस्लाम से बाज़ रहें। यह उज़्र दुरुस्त नहीं क्योंकि अमीर ख़ालिद थे न कि अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी। ख़्वाह यह ग़लती उम्दन हुई है या तअवीलन बहरहाल अमीर-ए-लश्कर इस ग़लती का ज़िम्मा दार था ख़ुसूसन जब आप ने तहक़ीक़ के बाद ख़ालिद पर शदीद नाराज़गी और उन से अपनी बेज़ारी का एलान फ़रमाया तो बहरहाल अब हमें आप का फ़ैसला तस्लीम करना चाहिए और यह वाक़िया मामूली न था कि फ़ैसला-ए-नबवी के बाद उस के लिए उज़्र तलाश किए जाएं कि ख़ालिद ने ठीक किया या ग़लत किया। आप ने फ़रमाया तुम ने ग़लत किया और बेज़ारी का इज़हार किया। बस इतना काफ़ी है हमारे लिए। बहरहाल उज़्र तलाश करेंगे तो इस से आज़ादी-ए-मज़हब से बारे में इस्लाम की जो उसूली तालीम है उस पर ज़द आती है। आप ने तो लड़ने वालों से जंग की इजाज़त दी है और तबलीग़-ए-इस्लाम में नर्मी बरतने का इरशाद फ़रमाया है। आप ने फ़त्ह-ए-मक्का के बाद असंख्य मुहिमें दाअवत-ए-इस्लाम की ग़र्ज़ से क़बाइल-ए-अरब की तरफ रवाना फ़रमाईं और उन के अमीरों को सरीह हिदायत की गई कि इस में लड़ाई से बचा जाए। कुतुब मग़ाजी व तारीख़ में सराहत है कि यह वफ़ूद तो दाअवत-ए-इस्लाम ही के लिए भेजे गए थे। सीरत इब्ने हिशाम और तबक़ात इब्ने सअद का वर्णन इस बारे में गुज़र चुका है। अल्लामा तबरी ने भी बाएं अल्फ़ाज़ तशरीह की है कि रसूलुल्लाह ने मक्का के अतराफ में सराया रवाना फ़रमाए ता वह लोगों को सनम परस्ती, बुत परस्ती से हटाएं और अल्लाह अज़्ज़ व जल की इबादत के लिए उन्हें बुलाएं और उन सराया को लड़ाई करने का क़तअन हुक्म नहीं दिया था।

बहरहाल आजकल जो शिद्दत पसन्द मौलवी हैं वह उन्हीं चीज़ों को दलील बना के क़त्ल करने का और लड़ने का जौज़ निकालते हैं लेकिन आप की बड़ी स्पष्ट तालीम है कि कोई जो सामने से जंग न करे उस से तुम ने जंग नहीं करनी और यह जुर्म है।

इमाम बुख़ारी की मुन्दरिजा रिवायत से भी इस अम्र की तस्दीक़ होती है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद दाअवत-ए-इस्लाम ही के लिए बनू जज़ीमा की तरफ भेजे गए थे। फ़ दआहुम इलल इस्लाम और उन्होंने तामील-ए-हुक्म में उन्हें इस्लाम की दाअवत दी। वह अच्छी तरह यूं न कह सके कि हम इस्लाम लाए। घबराहट में कहने लगे हम ने अपना दीन बदल डाला। इस फ़िकरे का तअल्लुक़ सारे क़बीले से नहीं था क्योंकि उन में से अक्सर पहले मुसलमान हो चुके थे बल्कि केवल एक ख़ास ख़ानदान से था जिन को अंदेशा था कि उन से इन्तिक़ाम लिया जाएगा इसलिए वह मुसल्लह हो कर लड़ने लगे। लड़ाई में अपनी पराजय देख कर सबअना से इस्लाम का इज़हार किया। इमाम बुख़ारी की रिवायत में ग़ायत दर्जा इख़्तिसार है और उन्होंने वही रिवायत क़बूल की है जो उन के मेयार-ए-सही पर है। जहदम ने अपने लोगों को मशवरा दिया था कि हथियार न डालो बल्कि मुक़ाबला करो। इस से भी मालूम होता है कि उसे साबिक़ा ख़ूनरेज़ी की वजह से अंदेशा था। इब्ने इसहाक़ की पहली रिवायत में उस के यह अल्फ़ाज़ नक़्ल किए गए हैं कि हे बनू जज़ीमा! याद रहे यह ख़ालिद है। हथियार डालने के बाद क़ैद व बंद होगा और उस के बाद गर्दन ज़नी। उस की क़ौम के बाज़ लोगों ने उसे पकड़ा और कहा कि तुम ख़ूनरेज़ी चाहते हो। लोग तो मुसलमान हो चुके और उन्होंने हथियार डाल दिए हैं। जंग ख़त्म है और अमन है। लोग उसे समझाते रहे और उस से हथियार ले लिए और हज़रत ख़ालिद के कहने पर बाक़ी लोगों ने भी हथियार उतार दिए। सीरत इब्ने हिशाम में इस तरह वर्णन है।

इस वर्णन से ज़ाहिर है कि ज़हदम के ख़दशात बिला वजह न थे। मालूम होता है कि सहाबा किराम क़बीले के नौ मुस्लिमीन को दीन-ए-इस्लाम की तालीम देने की ग़र्ज़ से वहां कुछ अर्सा ठहरे हैं। जैसा कि रिवायत के अल्फ़ाज़ हत्ता इज़ा कान यौमुन अमरा ख़ालिदुन से पाया जाता है और दुरान-ए-क़ियाम नागवार सूरत पैदा हुई है जिस से क़बीले के बाज़ लोगों से जंग हुई और पराजय खाने पर वह क़ैद हुए और जब क़ैदी मुजाहिदीन के सुपर्द किए गए तो बअईद नहीं कि बाज़ अफ़राद को अपना पुराना कीना निकालने का मौक़ा मिल गया हो और उन्होंने उसे क़त्ल कर दिया। इब्ने हिशाम ने इस तअल्लुक़ में इब्राहीम बिन जअफ़र महमूदी की सनद से आप के ख़्वाब और हज़रत अबू बकर की तअबीर का भी वर्णन किया है जो पहले में वर्णन कर चुका हूं कि आप ने खजूर, सतू और घी के मालीदे से चंद लक़्मे लिए जो मज़ेदार थे लेकिन आख़िर एक लक़्म हलक में अटक गया और हज़रत अली ने हाथ डाल कर निकाल लिया।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह तअबीर की कि इस का तअल्लुक़ तबलीग़ी वफ़्द से है और मशवरा दिया कि हज़रत अली को भेजा जाए ता ख़ालिद की ग़लती का तदारुक हो। इस ख़्वाब से भी ज़ाहिर है कि घटना का तअल्लुक़ क़बीला जज़ीमा के एक मह्दूद हिस्से से है और मख़्सूस क़ैदियों से था। यह नहीं कि सारे क़ैदी महज़ सबअना कहने से क़त्ल किए गए। दरअस्ल यह लोग इस्लाम में दाख़िल नहीं हुए थे और साबिक़ा इन्तिक़ाम का ख़ौफ़ व हरास उन के ज़हनों पर इतना ग़ालिब था कि वह अपने बचाओ की ख़ातिर लड़ने लगे। सुलैम बिन मंसूर और मुदलज बिन मुर्रह के बाज़ अफ़राद की तरफ से जो हज़रत ख़ालिद के लश्कर में शामिल थे उन्हें इन्तिक़ाम लिए जाने का अंदेशा था। चुनांचे सुलैम क़बीले के अफ़राद ही थे जिन्होंने अपने क़ैदी रात को क़त्ल कर के अपना बदला ले लिया। मुहाजेरीन व अन्सार में से किसी ने अपने क़ैदी क़त्ल नहीं किए बल्कि उन्हें आज़ाद कर के आप के इरशादात और आप के उसवा-ए-हसना पर अमल किया।

(उद्धृत मिन सहीह बुख़ारी, तर्जुमा व शरह हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली उल्लाह शाह साहिब, भाग 9 पृष्ठ 193 ता 199)

यह तशरीह बुख़ारी की हज़रत वली उल्लाह शाह साहिब ने लिखी है और मज़ीद आप ने यह बड़ा आलिमाना नोट भी लिखा है। जिस से यह अच्छी तरह स्पष्ट हो जाता है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की कोई बदनीयत शामिल न थी।

उन से एक इज्तिहादी ग़लती हुई और जल्दबाज़ी में उन्होंने एक फ़ैसला किया और बाद में बतौर अमीर-ए-लश्कर के जो सूरः हाल हुई उस की ज़िम्मा दारी उन की बनती थी। इस वजह से आप हज़रत ख़ालिद से नाराज़ भी हुए और ख़ुदा के हुज़ूर अपनी बेज़ारी का इज़हार भी फ़रमाया और जब आप ने सारे मामले की तहक़ीक़ फ़रमाई तो यही साबित हुआ कि किसी ग़लतफ़हमी की बिना पर यह क़त्ल हुए हैं तभी आप ने क़िसास की बजाय दियत दिए जाने का फ़ैसला फ़रमाया। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की गुज़ारिशात और मुआज़िरत पेश करने के बाद नबी ने ख़ालिद को न केवल माफ़ फ़रमा दिया। (यह कहना कि उन को सज़ा दी थी। बददुआ की थी। इसलिए बहुत नाराज़गी रही। दुरुस्त नहीं।) उन्होंने ख़ालिद को माफ़ फ़रमा दिया बल्कि चंद ही दिनों बाद ग़ज़वा हुनैन के लिए तैयार किए जाने वाले लश्कर के हरावल दस्ते और घड़ सवारों के दस्ते का निगरान और सालार हज़रत ख़ालिद को मुक़र्रर फ़रमाया।

(उद्धृत मिन अल-लौलौउल मकनून सीरत इनसाइक्लोपीडिया भाग 9 पृष्ठ 212-224 दारुस्सलाम) (ग़ज़वा हुनैन मुहम्मद अहमद बाशमील पृष्ठ 48 नफ़ीस अकादमी कराची)

अगर नाराज़गी इतनी थी तो दूसरे दस्ते का निगरान न मुक़र्रर फ़रमाते लेकिन आप ने उन को निगरान मुक़र्रर फ़रमाया। इस के इलावा दो और सराया का भी मुख़्तसर वर्णन मिलता है।

सरिया यलमलम आप ने हज़रत हिशाम बिन आस की क़यादत में दो सौ अफ़राद पर मुश्तमिल यह सरिया मक्का के जनूब पूर्व में स्थित यलमलम की तरफ भेजा जो मक्का और ताइफ़ के दरमियान दो रातों के फ़ासिले पर वाक़े है।

सरिया उरना यह अरफ़ात के सामने एक वादी है। वर्णन किया जाता है कि नबी करीम ने हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस को तीन सौ अफ़राद के लश्कर का अमीर बना कर उस तरफ भेजा था। बहरहाल इस सराया का वर्णन मुहम्मद बिन उमर वाकिदी ने किया है। इस के इलावा किसी और प्रसिद्ध जीवनी लेखक ने उसे वर्णन नहीं किया। इसलिए महल-ए-नज़र है कि यह सही भी है कि नहीं और न ही मज़ीद कोई तफ़्सील उस की मिलती है जबकि एक सीरत निगार ने यह लिखा है कि हमारे इल्म के मुताबिक़ किसी मोअर्रिख़ ने इस फ़ौजी दस्ते की कार्रवाइयों की तफ़ासील का वर्णन नहीं किया जिस की क़यादत ख़ालिद बिन सईद बिन आस ने उरना तक की थी। हां इस बात में कोई मतभेद नहीं पाया जाता कि उसे हुज़ैल क़बीले की तरफ भेजा गया था जो उरना में क़ियाम पज़ीर थे।

(उद्धृत मिन अल-लौलौउल मकनून सीरत इनसाइक्लोपीडिया भाग 9 पृष्ठ 224 दारुस्सलाम)

(ग़ज़वा हुनैन बाशमील पृष्ठ 35 ता 37 नफ़ीस अकादमी कराची)

बहरहाल इस से आप की इस सीरत का भी ख़ूब इल्म होता है कि कहीं भी आप ने सख़्ती नहीं की और यह इल्ज़ाम भी जो दुश्मनान-ए-इस्लाम लगाते हैं ग़लत है कि जंगों में आप ने क़त्ल करवाया। आप ने तो जहां ग़लती से भी कुछ हुआ है बड़ी नाराज़गियों का इज़हार फ़रमाया।

आप की बाक़ी ग़ज़वात और सराया का वर्णन इन शा अल्लाह आगे वर्णन होगा।

(अल-फ़ज़ल इंटरनैशनल 5 सितम्बर 2025 ई. पृष्ठ 2 ता 6)

★ ★ ★

अख़बार बदर ख़ुद भी पढ़ें और अपने मित्रों व परिचितों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें

हमारे मार्गदर्शक हज़रत खलीफ़तुल मसीह पंचम (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) ने अख़बार बदर के दिसंबर 2014 के विशेषांक के लिए अपना संदेश भेजते हुए फरमाया:

"अख़बार बदर के प्रबंधन और पाठकों को यह बात सदैव याद रखनी चाहिए कि इस अख़बार का प्रकाशन जमाअत के सदस्यों की आध्यात्मिक सुधार और प्रगति के लिए किया गया था। हमारे बुजुर्गों ने प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, पूर्ण लगन के साथ इसे निरंतर जारी रखने का प्रयास किया और उनकी प्रार्थनाओं पवित्र प्रयासों के आशीर्वाद से ही यह आज तक प्रकाशित हो रहा है। यह बात इस मांग को जन्म देती है कि अधिक से अधिक अहमदी इसे पढ़ें और इससे लाभ उठाएं। अल्लाह तआला अपनी कृपा से भारत के अहमदियों को विशेष रूप से और दुनिया भर में रहने वाले अहमदियों को सामान्य रूप से, इसके अध्ययन और इससे जुड़े आशीर्वादों को प्राप्त करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस अत्यंत महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक उपदेश को ध्यान में रखते हुए, अहमदिया जमाअत के सदस्यों से विनम्र निवेदन है कि प्रत्येक घर में अख़बार बदर के अध्ययन को सुनिश्चित करना अत्यावश्यक है। अख़बार बदर में कुरआन व हदीस और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के उच्च वचनों के अतिरिक्त, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के जुमअः के उपदेश, भाषणों, साथ ही साथ हज़ूर अनवर के विभिन्न देशों की पवित्र यात्राओं की अत्यंत रोचक और ईमान बढ़ाने वाली रिपोर्टें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं, जिनका अध्ययन प्रत्येक अहमदी के लिए आवश्यक है। अल्लाह तआला की कृपा और हमारे मार्गदर्शक हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दया से अब यह अख़बार उर्दू के अतिरिक्त हिंदी, बांग्ला, तमिल, तेलुगू, मलयालम, उड़िया और कन्नड़ भाषाओं में भी प्रकाशित हो रहा है। जिन अहमदी साथियों ने अभी तक अख़बार बदर अपने नाम से जारी नहीं करवाया है, उनसे अनुरोध है कि अख़बार बदर अपने नाम से जारी करवाकर स्वयं भी इसका अध्ययन करें और अपने बच्चों और घर के अन्य सदस्यों को भी इसे पढ़ने का अवसर प्रदान करें। अल्लाह तआला हमें हमारे हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के उपदेशों पर, उनकी वास्तविक भावना के अनुसार, पूर्ण रूप से अमल करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।

अख़बार बदर के समय पर न पहुंचने, चंदे की अदायगी, या किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए कृपया कार्यालय प्रबंधक, साप्ताहिक अख़बार बदर से संपर्क करें।

(प्रबंधन)

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

शनिवार, 3 नवंबर 2018

(भाग दो)

(पिछले से जारी) इसके बाद कार्यक्रम के अनुसार हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के बाहरी परिसर में स्थित मार्केट में तशरीफ़ ले गए जहाँ मस्जिद-ए-मसरूर के उद्घाटन के संदर्भ में एक समारोह का आयोजन किया गया था।

इस समारोह में विभिन्न जमाअतों से आने वाले जमाअती पदाधिकारियों के अतिरिक्त दो सौ के लगभग मेहमान शामिल हुए। इन मेहमानों में निम्नलिखित अहबाब शामिल थे:

अमेरिकी कांग्रेसमैन Hon. Gerry Connolly, टॉम लैंटोस फाउंडेशन ऑफ ह्यूमन राइट्स एंड जस्टिस के अध्यक्ष, गाम्बिया के राजदूत Hon. Dawda Fadera, वर्जीनिया रा+ज्य के सीनेटर, वर्जीनिया हाउस ऑफ डेलिगेट्स के सदस्य, डीसी सिटी काउंसिल के अध्यक्ष, मैनासस पार्क के मेयर, फेयरफैक्स के मेयर, प्रिंस विलियम काउंटी बोर्ड ऑफ सुपरवाइज़र्स के अध्यक्ष।, प्रिंस विलियम और फेयरफैक्स काउंटी बोर्ड के पाँच सदस्य, जॉर्ज मेसन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर अब्दुल अज़ीज़ सचेदीना, जॉर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी के दो प्रोफेसर साहिबान, यहूदी संगठन के उपाध्यक्ष

इसके अतिरिक्त डॉक्टर, शिक्षक, वकील, पत्रकार, मीडिया के प्रतिनिधि, सुरक्षा एजेंसियों के प्रतिनिधि और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े मेहमान शामिल थे।

कार्यक्रम की शुरुआत कुरआन करीम की तिलावत से हुई जो श्रीमान फारान रब्बानी साहिब, मुबल्लिग सिलसिला साउथ वर्जीनिया (यू.एस.ए) ने की और बाद में अंग्रेजी भाषा में इसका अनुवाद प्रस्तुत किया।

इसके बाद श्रीमान अमजद महमूद खान साहिब, नेशनल सेक्रेटरी अमूर-ए-खारिजा यूएस ने मेहमानों का स्वागत करते हुए इस समारोह के संदर्भ में अपना परिचयात्मक भाषण प्रस्तुत किया।

बाद में तीन मेहमानों ने अपने भाषण प्रस्तुत किए।

सबसे पहले कांग्रेसमैन Gerry Connolly साहिब ने अपना भाषण प्रस्तुत करते हुए कहा:

मैं हज़ूर का Prince William County में स्वागत करता हूँ। मस्जिद-ए-मसरूर के उद्घाटन का अवसर अपने आप में बहुत महानता रखता है। हज़ूर अमेरिका में ऐसे समय में तशरीफ़ लाए हैं जब हम मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं जहाँ हर दिन कोई न कोई दुर्घटना होती रहती है। अभी हाल ही में पिट्सबर्ग, पेंसिल्वेनिया में सिनेगॉग में भी दुर्घटना हुई है। हमारे देश को 'सबके लिए प्यार, किसी से नफ़रत नहीं' जैसे शब्दों पर ध्यान देने की सख्त जरूरत है। हज़ूर-ए-अनवर के सामने विभिन्न वर्गों से जुड़े मेहमान तशरीफ़ फरमा हैं जो बहु-सांस्कृतिक समाज का स्वागत करते हैं। हमारे देश का आदर्श वाक्य (मोट्टो) और प्रतीक E Pluribus Unum है। यह एक लैटिन कहावत है जिसका अर्थ है 'बहुत सी चीजों से मिलकर एक'। हम सब एक समाज हैं, हम सब एक देश हैं। इसलिए हम आज आपकी इस खूबसूरत मस्जिद के उद्घाटन की खुशी में शामिल हैं और आपका स्वागत करते हैं। आप जो संदेश लेकर आए हैं उसमें हमारे लिए भी बेहतरी है।

मुझे यूनाइटेड स्टेट्स कांग्रेस में अहमदिया मुस्लिम कॉकस में शामिल होने पर भी गर्व है। इसी तरह मुझे इस बात पर भी बहुत गर्व है कि हज़ूर-ए-अनवर के स्वागत के लिए जो प्रस्ताव (रिज़ॉल्यूशन) पेश हुआ था उसकी ड्राफ्टिंग में मेरा भी योगदान था।

मैं खास तौर पर हज़ूर-ए-अनवर की पूरी दुनिया में शांति स्थापना के लिए की जा रही कोशिशों और जिस तरह आप चरमपंथ और अत्याचारों की निंदा कर रहे हैं, उसकी सराहना करता हूँ। आपका धार्मिक स्वतंत्रता, मानवाधिकार और लोकतंत्र की स्थापना का संकल्प प्रशंसनीय है। आज हज़ूर की यहाँ तशरीफ़ आवरी हमारे लिए गर्व की बात है। शुक्रिया।

अपने भाषण के अंत में कांग्रेसमैन ने हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में रिज़ॉल्यूशन की कॉपी भी पेश की जिस पर हज़ूर-ए-अनवर ने मौसूफ़ का शुक्रिया अदा किया।

इसके बाद डॉ. Katrina Lantos Swett जो कि मानवाधिकार और न्याय के संगठन टॉम लैंटोस फाउंडेशन की प्रमुख हैं, ने अपना भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा:

आप सबका बहुत शुक्रिया। निस्संदेह इस अवसर पर उपस्थित होना मेरे लिए बहुत खुशी और गर्व की बात है। पिछले कुछ वर्षों में मुझे हज़ूर-ए-अनवर के साथ चार-पाँच बार मुलाकात करने का श्रेय प्राप्त हुआ है और जब भी मुझे हज़ूर की सेवा में उपस्थित होने का मौका मिलता है तो मैं शांति, प्यार और सद्भाव की भावनाएँ ही महसूस करती हूँ।

उन्होंने कहा: कांग्रेसमैन Gerry Connolly की बात को ही मैं दोहराऊँगी कि हमें इस समय हज़ूर-ए-अनवर के संदेश की पहले से कहीं अधिक सख्त जरूरत है। जब मैं यूनाइटेड स्टेट्स के रिलीजस फ्रीडम कमीशन की अध्यक्ष थी तब मुझे जमाअत अहमदिया के बारे में पता चला था। आप सभी लोग जानते हैं कि जमाअत अहमदिया एक बहुत ही शानदार समुदाय है जिसने दुनिया के हर कोने में मानवता की सेवा और ईमान पहुँचाया है। और ये सारे काम जमाअत अहमदिया अपने ऊपर होने वाले भीषण अत्याचारों के बावजूद संपन्न करती चली जा रही है। पाकिस्तान में अहमदी नागरिकों को वोट देने के अधिकार प्राप्त नहीं हैं, उनके संरक्षण और उनके पाकिस्तान में अस्तित्व के मौलिक अधिकारों को खतरा है जबकि सरकार को चाहिए कि वह उनके अधिकारों की रक्षा करे। हालाँकि पाकिस्तान के इतिहास में जो सबसे प्रसिद्ध व्यक्तित्व गुजरे हैं उनमें से सबसे ऊँचा दर्जा पाने वाले लोग अहमदी थे। पाकिस्तान में एकमात्र नोबेल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक अहमदी थे। जिस व्यक्ति ने पाकिस्तान का संविधान लिखवाया वह एक अहमदी विधिवेत्ता था। लेकिन इसके बावजूद अहमदी इस देश में भीषण अत्याचारों का शिकार हैं। अहमदी मुझे हमेशा उस सुनहरे सिद्धांत की याद दिलाते हैं कि बुराई के बदले बुराई न करें। अत्याचार का मुकाबला अत्याचार और गुस्से से नहीं करना बल्कि बुराई का मुकाबला अच्छाई के साथ करना है। जमाअत अहमदिया का अस्तित्व ही हमें हमारी उस जिम्मेदारी की ओर ध्यान दिलाता है कि हमें अंतरात्मा और धर्म की स्वतंत्रता की रक्षा करनी है।

इसके बाद वर्जीनिया हाउस ऑफ डेलिगेट्स (Virginia House of Delegates) की सदस्य Hala Ayala ने अपना भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने भाषण की शुरुआत में सीनेटर Jeremy McPike को भी मंच पर आने का निमंत्रण दिया।

उन्होंने कहा: हज़ूर-ए-अनवर का स्वागत करना मेरे लिए गर्व की बात है और मस्जिद-ए-मसरूर के उद्घाटन समारोह में शामिल होना मेरे लिए हर्ष का विषय है। मैं अपने गवर्नर Ralph Northam का संदेश लेकर आई हूँ।

गवर्नर ने इस कार्यक्रम में शामिल न हो पाने पर अफसोस जताया है और हज़ूर-ए-अनवर के लिए बधाई का संदेश भिजवाया है। गवर्नर Northam ने अपने संदेश में हज़ूर-ए-अनवर की दुनिया भर में शांति स्थापना, मानवता की सेवा और वैश्विक अधिकारों के संरक्षण के लिए की जा रही कोशिशों की सराहना की। गवर्नर ने कहा कि वर्जीनिया राज्य हर धर्म से जुड़े इंसान का स्वागत करती है और हर धर्म का समान आदर करती है। गवर्नर ने अपने संदेश में जमाअत अहमदिया के सदस्यों का भी शुक्रिया अदा किया जो कि फूड ड्राइव्स, क्लोदिंग ड्राइव्स का आयोजन करने और रक्तदान करने में अग्रणी हैं।

इसके बाद श्रीमती और उनके साथ सीनेटर McPike ने हज़ूर-ए-अनवर

अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में गवर्नर की ओर से दिया जाने वाला प्रमाणपत्र (सर्टिफिकेट ऑफ रिकग्निशन) पेश किया।

इस सर्टिफिकेट पर लिखा था कि '3 नवंबर को जमाअत अहमदिया अमेरिका वर्जीनिया में अपनी मस्जिद के उद्घाटन का समारोह मना रही है। जमाअत अहमदिया वर्जीनिया इस मस्जिद के माध्यम से बहुत से कल्याणकारी कार्यों में हिस्सा ले रही है। हज़ूर मुस्लिम दुनिया के एक महत्वपूर्ण नेता हैं जो अपने खुतबात, भाषणों, अपनी किताबों और अन्य बैठकों के माध्यम से शांति का संदेश फैला रहे हैं। हम हज़ूर का Prince William काउंटी में स्वागत करते हैं।'

इसके बाद छह बजकर बारह मिनट पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मेहमानों से अंग्रेजी भाषा में संबोधित किया। हज़ूर-ए-अनवर ऐदहुल्लाह तआला के संबोधन का उर्दू अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है।

हज़ूर-ए-अनवर ने अपने संबोधन की शुरुआत तशह्हुद और तऊज़ से फ़रमाई। इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

सभी सम्मानित मेहमानों! अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातहू। आप सब पर अल्लाह तआला की शांति और बरकतें हों। इस अवसर पर सबसे पहले तो मैं अपने सभी मेहमानों का हमारा निमंत्रण स्वीकार करने और इस मस्जिद के उद्घाटन में शामिल होने पर शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। आप लोगों का शुक्रिया अदा करना वास्तव में मेरा धार्मिक कर्तव्य है क्योंकि इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह शिक्षा दी है कि जो इंसान दूसरे इंसान का आभारी नहीं है वह अल्लाह तआला का भी आभारी नहीं हो सकता।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

इस शहर में रहने वाली अधिकांश आबादी गैर-मुस्लिमों की है और इस इलाके में अहमदियों की संख्या बहुत कम है लेकिन इसके बावजूद यहाँ के लोगों और काउंटी अधिकारियों ने हमें यहाँ मस्जिद बनाने की अनुमति दी है। इससे आप लोगों के दिल की विशालता और सहिष्णुता के उच्च मानक प्रकट होते हैं। इसके अलावा, आप में से अधिकतर मुसलमान नहीं हैं लेकिन फिर भी एक धार्मिक और इस्लामी समारोह में शामिल हो रहे हैं, यह बात भी आपके खुले दिमाग होने की परछाई दिखाती है और यह आपकी आपसी सहिष्णुता और अच्छी फितरत की वजह से है कि आप लोग बड़ी सफलता से अपने भीतर नए समुदायों और समाजों को समाहित कर लेते हैं।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हम सब जानते हैं कि इस दौर में इस्लाम को मीडिया में बड़े पैमाने पर नकारात्मक रंग में दिखाया जा रहा है। इस नकारात्मक कवरेज की सबसे बड़ी वजह यह है कि कुछ तथाकथित मुसलमानों की एक छोटी संख्या को चरमपंथी बनाया गया है जिन्होंने अपने नफरत से भरे कामों को सही ठहराने के लिए इस्लाम का नाम इस्तेमाल करके बेहद निंदनीय तरीके अपनाए हैं। इसके नतीजे में अक्सर गैर-मुसलमानों के दिलों में इस्लाम के बारे में आशंकाएँ और डर पैदा हो गए हैं। बल्कि लोग दिन-ब-दिन इस्लाम को समाज के लिए एक खतरा समझने लग गए हैं। इन बातों के आलोक में स्थानीय लोगों का मस्जिद के निर्माण की अनुमति दे देना और फिर इस मस्जिद के उद्घाटन की खुशी में शामिल होना अत्यंत प्रशंसनीय कार्य है और मुझे बाध्य करता है कि मैं एक बार फिर आप सभी लोगों का दिल की गहराइयों से शुक्रिया अदा करूँ।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैं आप लोगों को इस बात का भी यकीन दिलाना चाहता हूँ कि मीडिया में जो इस्लाम को नकारात्मक रंग में दिखाया जा रहा है उसका धर्म की वास्तविकता से दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं है। कुछ अलग-थलग लोग या कुछ समूह जो अपनी घिनौनी हरकतों को सही ठहराने के लिए इस्लाम का नाम इस्तेमाल करते हैं, उनका इस्लाम के साथ कोई भी संबंध नहीं है। इस्लाम तो प्यार, मोहब्बत, शांति, सुलह और भाईचारे की शिक्षा देता है। वास्तव में 'इस्लाम' जो कि अरबी शब्द है, उसके मायने ही 'शांति' के हैं। इसलिए एक ऐसा धर्म जिसका नाम और जिसकी बुनियाद ही शांति पर कायम है, उसके लिए यह नासंभव है कि वह ऐसी बातों की इजाजत दे या ऐसी चीजों को बढ़ावा दे जिनसे समाज की शांति खतरे में पड़ जाए बल्कि ऐसे धर्म के लिए जरूरी है कि वह शांति को बढ़ावा दे और मानवता में प्यार और मोहब्बत फैलाए। निस्संदेह कुरआन करीम जो कि हमारी पवित्र किताब और इस्लामी शिक्षाओं और इस्लामी कानून का सबसे अधिक विश्वसनीय और प्रामाणिक स्रोत है, उससे हमने यही चीजें सीखी हैं। शुरू से लेकर आखिर तक कुरआन करीम सिर्फ शांति की किताब है जो कि वैश्विक मानवाधिकारों और मूल्यों को समेटे हुए है। इसकी शिक्षाएँ इंसानियत को मानवता के झंडे तले एकजुट करती हैं और हर एक व्यक्ति के अधिकार की गारंटी देती हैं कि वह पूरी आज़ादी, न्याय और इंसाफ के साथ अपनी जिंदगी गुजार सके।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: कुरआन करीम में फ़रमाया गया है कि अल्लाह तआला ने सभी कौमों में रसूल भेजे ताकि वे उन कौमों के भीतर मौलिक अधिकारों और न्याय व इंसाफ के मूल्यों को कायम करें। ये रसूल इसलिए भेजे गए कि उन कौमों का अल्लाह तआला के साथ और उसकी मखलूक के साथ रिश्ता कायम हो और वे इंसानियत को एक-दूसरे के अधिकार अदा करने की तरफ ध्यान दिलाएँ। हम मुसलमान होने के नाते यह ईमान रखते हैं कि इन मकसदों को पूरा करने के लिए अल्लाह तआला ने सभी कौमों में रसूल भेजे और बड़े-बड़े धर्मों का इतिहास साबित करता है कि सभी नबियों (अलैहिमुस्सलाम) ने नैतिकता और भलाई के उच्च मूल्यों पर अमल करने और उनका प्रचार करने वाले थे। इसलिए इस्लाम की शिक्षाएँ तो मानवता को एकजुट करती हैं और धर्म, रंग और नस्ल के भेद से ऊपर उठकर आपस में आपसी प्यार और आदर की भावना को बढ़ावा देती हैं। इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो बीच में आने वाली रुकावटों को गिराता है और शांतिपूर्ण और सहिष्णु वार्तालाप की हिमायत करता है। इसलिए एक सच्चे मुसलमान के बारे में यह सोचा भी नहीं जा सकता कि वह दूसरे धर्मों का विरोध करे और उनके मानने वालों पर अत्याचार ढाए। इस्लाम ने कभी भी और कहीं भी उग्रवाद की शिक्षा नहीं दी और न ही जुल्म की किसी भी शकल को बढ़ावा दिया। जब कभी या जहाँ कहीं भी अगर किसी मुसलमान ने आतंकवादी हमला किया या किसी तरह की चरमपंथी या उन्माद का प्रदर्शन किया तो यह सिर्फ इस्लामी शिक्षाओं से दूरी की वजह से किया। इस तरह के लोग या इस किस्म की हरकतें सिर्फ और सिर्फ इस्लाम के पवित्र नाम को बदनाम करती हैं।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: कुरआन करीम की सबसे पहली सूरत 'अल-फातिहा' में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि वह "रब्बुल आलमीन" है जो सभी इंसानों का पालन-पोषण करता है। इसका मतलब है कि वह लोगों के धर्म और विश्वास से ऊपर उठकर सारी इंसानियत का पालन-पोषण करता है। ऐसे लोग जो अल्लाह तआला के अस्तित्व के इनकार करने वाले होते हैं या नास्तिक होते हैं, वे लोग भी अल्लाह तआला की रहमानियत और रहीमियत से फायदा उठाते हैं। इसलिए जहाँ कुरआन करीम अल्लाह तआला को 'रब्बुल आलमीन' क़रार देता है, वहाँ यह भी बताता है कि अल्लाह तआला रहमान और रहीम है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसी तरह अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में फ़रमाया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रहमतुल्लिल आलमीन हैं। बिना किसी शक और शुबहा के इस्लाम के पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी सारी जिंदगी इंसानियत से बेपनाह मोहब्बत और शफकत का प्रदर्शन किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का दिल मोहब्बत और प्यार से भरा हुआ था और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हर वक्त इंसानियत की बेहतरी में लगे रहते और हमेशा दूसरों की तकलीफें दूर करने की कोशिश करते। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने अनुयायियों को सारी इंसानियत की इज्जत और तकरीम करने की शिक्षा दी। मिसाल के तौर पर एक मौक़े पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फरमा थे और करीब से एक जनाजा गुजरा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फौरन खड़े हो गए। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के एक सहाबी ने अर्ज़ किया कि यह तो यहूदी का जनाजा था न कि मुसलमान का। इस पर इस्लाम के पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क्या वह इंसान नहीं था? इससे पता चलता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दिल में इंसानियत के लिए कितनी मोहब्बत थी। इससे यह भी पता चलता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने किस तरह अपने अनुयायियों को दूसरे विश्वासों और धर्मों के लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने की शिक्षा दी कि उन्हें दूसरों की भावनाओं का ख्याल रखना चाहिए और उनके जज़्बात का आदर करना चाहिए।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: बहुत से लोग यह प्रश्न करते हैं कि क्या इस्लाम धार्मिक आज़ादी को बढ़ावा देता है? इस प्रश्न के उत्तर में मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पाक जिंदगी से एक और मिसाल देता हूँ। एक बार नजरान के ईसाइयों का एक प्रतिनिधिमंडल

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मिलने के लिए मदीना आया। कुछ देर के बाद ये ईसाई बेचैन होने लग गए। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा कि 'सब खैरियत है?' ईसाइयों ने उत्तर दिया कि यह वक्त उनकी इबादत का है लेकिन यहाँ पर इबादत करने के लिए कोई मुनासिब जगह नहीं है। इस पर रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ईसाइयों को उनके तरीके के मुताबिक मदीना में मौजूद अपनी मस्जिद में इबादत के लिए दाअवत दी। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस शानदार मिसाल के जरिए सारी इंसानियत के लिए धार्मिक सहिष्णुता और धार्मिक आज़ादी की हमेशा रहने वाली मिसाल कायम कर दी। लेकिन फिर भी कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि पहले दौर के मुसलमानों ने जंगें क्यों लड़ीं?

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैं इसकी भी वजाहत कर दूँ कि इस्लाम के शुरुआती दौर में जो जंगें हुईं वे किसी तरह के धार्मिक उन्माद या धर्म के प्रचार के लिए नहीं थीं बल्कि उनका मकसद सिर्फ अपनी रक्षा करना था। उस वक्त मुसलमानों पर जुल्म ढाए जा रहे थे और उन्हें अत्याचारों का शिकार बनाया जा रहा था। उन्हें अपना घर-बार छोड़कर दूसरे शहरों में जाना पड़ा था। उनके माल और जान को नुकसान पहुँचाया जा रहा था। इसलिए उन जंगों का मकसद सिर्फ अपनी रक्षा करना था। इस बात को कुरआन करीम की इस आयत से साबित किया जा सकता है जिसमें अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जो लोग तुमसे लड़ते हैं, तुम भी उनसे लड़ो लेकिन हद से गुजरने वाले न बनो। बेशक अल्लाह तआला हद से गुजरने वालों को पसंद नहीं करता। इस आयत से यह बात साफ हो जाती है कि इस्लाम ने जंग की इजाजत सिर्फ अपनी रक्षा के लिए दी है और यह भी कि जंग के दौरान भी हद से गुजरने की इजाजत नहीं है। इसलिए जो लोग इस्लाम के नाम पर आतंकवादी हमले करते हैं और जो लोग इस्लाम के नाम पर दूसरों के खिलाफ जंग छेड़ते हैं, वे इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं के खिलाफ काम कर रहे हैं। वे इस्लाम के नाम को बदनाम कर रहे हैं और इस्लाम के खिलाफ भी जंग छेड़ रहे हैं। इसलिए मैं दुनिया भर के मुसलमानों से अपील करता हूँ कि वे इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं को अपनाएँ और उन पर अमल करें। उन्हें चाहिए कि वे इस्लाम के पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पाक जिंदगी से प्रेरणा लें और उनकी सुन्नत पर चलें। उन्हें चाहिए कि वे दूसरों के साथ प्यार और मोहब्बत का व्यवहार करें और दूसरों के अधिकारों का ख्याल रखें। उन्हें चाहिए कि वे दूसरों की भावनाओं का आदर करें और दूसरों के धर्मों का भी आदर करें। उन्हें चाहिए कि वे दूसरों के साथ शांति और सद्भाव से रहें और दुनिया में शांति और अमन कायम करने में अपना योगदान दें।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैं दुनिया भर के मुसलमानों से यह भी कहना चाहता हूँ कि वे इस बात का ख्याल रखें कि इस्लाम एक शांतिपूर्ण धर्म है और इस्लाम ने कभी भी आतंकवाद या चरमपंथ की शिक्षा नहीं दी। इस्लाम ने हमेशा शांति और सद्भाव की शिक्षा दी है। इस्लाम ने हमेशा इंसानियत की सेवा और मानवता की भलाई की शिक्षा दी है। इसलिए मुसलमानों को चाहिए कि वे इस्लाम की इन सच्ची शिक्षाओं को दुनिया के सामने पेश करें और दुनिया को यह बताएँ कि इस्लाम एक शांतिपूर्ण धर्म है और इस्लाम सभी इंसानों के लिए प्यार और मोहब्बत का संदेश लेकर आया है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैं एक बार फिर आप सभी मेहमानों का शुक्रिया अदा करता हूँ कि आपने इस समारोह में शिरकत की और अपनी कीमती वक्त हमें दिया। मैं अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि वह आप सभी को खुशियों और सलामती से नवाजे और आप सभी के घरों में शांति और अमन कायम रखे। आमीन।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के संबोधन के बाद श्रीमान मुहम्मद अहमद चौधरी साहिब, सदर जमाअत अहमदिया अमेरिका ने मेहमानों का शुक्रिया अदा किया और कहा कि हज़ूर-ए-अनवर के संबोधन ने हम सबके दिलों को छू लिया है और हम सबके लिए यह एक बहुत बड़ी प्रेरणा है। उन्होंने कहा कि हम सब मिलकर इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं को दुनिया के सामने पेश करेंगे और दुनिया में शांति और अमन कायम करने में अपना योगदान देंगे।

इसके बाद कार्यक्रम का समापन दुआ से हुआ।

(शेष)

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

कोई भी ऐसा नफ़्स नहीं जो आग में वारिद (प्रवेश करने वाला) न हो। यह वह वादा है जो तेरे रब ने अपने पर अम्र लाजिम और वाजिबुल अदा ठहरा रखा है। फिर हम इस आग में वारिद होने के बाद मुत्तक़ीन (डर रखने वालों) को नजात दे देते हैं और ज़ालिमों को अर्थात उनको जो मुशरिक और सरकश (अवज्ञाकारी) हैं, जहन्नम में ज़ानू (घुटने) पर गिरे हुए छोड़ देते हैं... इस आयत में बयान फ़रमाया कि मुत्तक़ी भी इस नार (आग) की मस (छू) से ख़ाली नहीं हैं। इस बयान से मुराद यह है कि मुत्तक़ी इसी दुनिया में, जो दारुल इब्तिला (परीक्षा स्थल) है, अनवाए अक़्साम (तरह-तरह) के पराए (रूप) में बड़ी मर्दानगी से इस नार में अपने तईं (आप को) डालते हैं और अल्लाह तआला के लिए अपनी जानों को एक भड़कती हुई आग में गिराते हैं और तरह-तरह के आसमानी क़ज़ा व क़दर भी नार की शक्ल में उन पर वारिद होते हैं, वह सताए जाते और दुख दिए जाते हैं और इस क़दर बड़े-बड़े ज़लज़ले उन पर आते हैं कि उन के मासवा (सिवाय) कोई उन ज़लज़लों की बर्दाश्त नहीं कर सकता। और हदीस--ए-सही में है कि तप (बुख़ार) भी जो मोमिन को आता है वह नार-ए-जहन्नम में से है और मोमिन बूजह-ए-तप (बुखार के कारण) और दूसरी तकलीफ़ों के नार का हिस्सा इसी आलम (संसार) में ले लेता है। और एक दूसरी हदीस में है कि मोमिन के लिए इस दुनिया में बिहिश्त (जन्नत) दोज़ख़ की सूरत में मुतमस्सिल (प्रकट) होता है अर्थात अल्लाह तआला की राह में तकलीफ़ें-ए-शाक़्क़ा (कठिन कष्ट) जहन्नम की सूरत में उसको नज़र आती हैं। पस वह बतईब-ए-ख़ातिर (प्रसन्नतापूर्वक) इस जहन्नम में वारिद हो जाता है तो मुआन (तुरंत) अपने तईं बिहिश्त में पाता है।" (आईनए कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 5, सफ़हा 142 से 145) दुनयवी तकलीफ़ों और आज़माइशों में बहुत सी इलाही हिकमतें मख़्फ़ी (छिपी) होती हैं, जिन तक कभी-कभी इंसानी अक़्ल की रसाई (पहुँच) संभव नहीं होती। पस इंसान को सब्र और दुआ के साथ उन को बर्दाश्त करने की कोशिश करनी चाहिए। सैय्यिदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "कभी-कभी मस्लहत-ए-इलाही यही होती है कि दुनिया में इंसान की कोई मुराद हासिल नहीं होती। तरह-तरह के आफ़ात (आपदाएँ), बलाएँ, बीमारियाँ और नामुरादियाँ लाहिक-ए-हाल (आ घेरने वाली) होती हैं मगर इन से घबराना न चाहिए।" (मल्फ़ूज़ात जिल्द पंजम, सफ़हा 23, एडिशन 2016 ई.)

प्रश्न: जर्मनी से एक मुरब्बी साहब ने हज़रत अनवर ऐदहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ की सेवा-ए-अक़्दस में तहरीर किया कि क्या एक औरत अपने माहवारी (विशेष दिनों) के दौरान किसी औरत की मय्यत (लाश) को ग़ुस्ल दे सकती है? निज़ (साथ ही) यह कि जिस व्यक्ति को सदक़ा दिया जाए, क्या उसे बताना ज़रूरी है कि यह सदक़ा की रक़म है? हज़रत अनवर ऐदहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने अपने मक़्तूब मूरख़ा 15 सितम्बर 2021 ई. में इस बारे में निम्नलिखित हिदायात अता फ़रमाईं। हज़रत अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: क़ुरआन करीम या अहादीस में ज़ाहिरन कोई ऐसी ममानियत नहीं आई कि हाइज़ा (माहवारी वाली) या जुनुबी (बिना ग़ुस्ल वाला) किसी मय्यत को ग़ुस्ल नहीं दे सकते। जबकि असहाबा (सहाबा) व ताबेईन (ताबेईन) निज़ फ़ुक़हा में इस बारे में मतभेद (मतभेद) पाया जाता है। कुछ उस के जवाज़ (जायज़ होने) के क़ाइल (मानने वाले) हैं और उनकी दलील आनहज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फ़रमान है कि इन्नल मुस्लिमा लैसा बिनजसिन। (अस-सुननुल कुबरा लिल बैहक़ी, किताबुल जनाइज़, बाब मन लम यरिल ग़ुस्लि मिन ग़स्लिल मैयित) अर्थात मुसलमान नापाक नहीं होता। लिहाज़ा उन के नज़दीक किसी जुनुबी या हाइज़ा के मय्यत को ग़ुस्ल देने में कोई हरज नहीं। जबकि एक गिरोह के नज़दीक हाइज़ा और जुनुबी का मय्यत को ग़ुस्ल देना मकरूह (नापसन्दीदा) है। और एक तीसरी राय यह है कि अगर मजबूरी हो और हाइज़ा और जुनुबी के अतिरिक्त कोई और मय्यत को ग़ुस्ल देने वाला मौजूद न हो तो उस मजबूरी की सूरत में हाइज़ा और जुनुबी मय्यत को ग़ुस्ल दे सकते हैं लेकिन आम हालात में उन्हें मय्यत को ग़ुस्ल नहीं देना चाहिए।

मेरे नज़दीक भी आम हालात में हाइज़ा और जुनुबी को मय्यत को ग़ुस्ल नहीं देना चाहिए लेकिन अगर कोई दूसरा मौजूद न हो तो मजबूरी की हालत में हाइज़ा या जुनुबी के मय्यत को ग़ुस्ल देने में कोई हरज की बात नहीं।

आप के दूसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि सदक़ा बता कर देना चाहिए क्योंकि कई लोग सदक़ा लेना पसन्द नहीं करते। फिर हदीस में भी आता है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अगर सदक़ा की कोई चीज़ आती तो आप अपने और अपने अहल-ए-ख़ाना (परिवार) के लिए उसे इस्तेमाल न फ़रमाते बल्कि अहल-ए--सुफ़्फ़ा (मस्जिद-ए-नबवी में रहने वाले गरीब सहाबा) को भिजवा देते, लेकिन अगर कोई हदिया (उपहार) पेश करता तो उस में से ख़ुद भी खाते और अहल-ए-सुफ़्फ़ा को भी भिजवाते। इस से तो ज़ाहिरन यही साबित होता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में सदक़ात और हदिया जात पेश करने वाले भी आप को बताया करते थे कि यह सदक़ा है या हदिया है। इसी लिए तो आप उस के इस्तेमाल में भी फ़र्क़ फ़रमाया करते थे। (सही बुख़ारी, किताबुर रक़ाक़, बाब कैफ़ा काना ऐशुन नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व असहाबिही व तख़ल्लीहिम मिनद दुनया)

★ ★ ★

...एक गैर-जमाअत महिला द्वारा जमाअत के बारे में पूछे गए कुछ प्रश्नों के बेसीरत अफ़रोज़ उत्तर तथा कुछ सपनों की ताबीर

...दीन के उलमा और अक़्ल रखने का दावा करने वाले मुसलमानों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त में पूरी होने वाली भविष्यवाणियाँ नज़र क्यों नहीं आतीं?

...हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नबूव्वत किस किस्म की थी और 'ला नबी बअदी' की क्या वज़ाहत है?

...'खिलाफ़त अला मिन्हाजिन्नबुव्वत' से क्या मुराद है?

...'मीनार-ए-मसीह' को तामीर करने का क्या मक़सद था?

...अहादीस में मज़कूर है कि हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम के ज़ुहूर के चालीस साल बाद क़ियामत का ज़ुहूर होगा, इससे क्या मुराद है?

तीन तलाक़ों के बारे में मार्गदर्शन

लड़कों और लड़कियों द्वारा अपने शरीर के विभिन्न हिस्सों पर पियर्सिंग (Piercing) कराने के बारे में क्या मार्गदर्शन है?

रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अशरे और ज़ुल-हज्जा के पहले अशरे में से किसकी फ़ज़ीलत ज़्यादा है?

अगर किसी ने मय्यत (मृत व्यक्ति) को छुआ हो तो क्या उसके लिए ग़ुस्ल-ए-जनाबत (स्नान) करना फ़र्ज़ है और क्या वह बिना ग़ुस्ल किए नमाज़-ए-जनाज़ा में शामिल हो सकता है?

क्या अल्लाह तआला का नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) इस दुनिया में तकलीफ़ और मुसीबतों में रहता है या मोमिन तकलीफ़ों का शिकार रहता है?

क्या एक औरत अपने माहवारी (विशेष दिनों) के दौरान किसी औरत की लाश को ग़ुस्ल दे सकती है?

जिस व्यक्ति को सदक़ा दिया जाए, क्या उसे यह बताना ज़रूरी है कि यह सदक़ा की रक़म है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त-41-42)

जहाँ तक 'मीनार-ए-मसीह' का तअल्लुक़ है तो जिस तरह साबिक़ा अंबिया और ख़ुदा तआला के फ़िरिस्तादा अपने ज़मानों में भविष्यवाणियों को ज़ाहिरी तौर पर भी पूरी करने की कोशिश करते रहे हैं, उसी सुन्नते अंबिया की इत्तिबा में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी ख़ुदा तआला के इज़्न से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दर्ज़-ज़ैल पेशगोयी को ज़ाहिरी तौर पर पूरा करने के लिए इस मीनार की तामीर शुरू करवाई। हज़रत नोवास बिन समआन रज़ियल्लाहो अन्हु एक लंबी रिवायत वर्णन करते हुए उस में कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि ... इज़ बअसल्लाहुल मसीहब्ना मरयम फा यंज़िलु इंदल मनारतिल बैज़ाए शर्क़ीय्ये दिमश्क़। अर्थात जब अल्लाह तआला ईसा बिन मरयम अलैहिमस्सलाम को भेजेगा तो वह दिमश्क़ (दमिश्क) के मशरिक में सफ़ेद मीनार के पास उतरेंगे। (सही मुस्लिम, किताबुल फितन व अशरातिस्साअह) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इस पेशगोयी को ज़ाहिरन पूरा करने के लिए कई मुसलमान बादशाहों ने इस किस्म के मीनार की तामीर की कोशिश की। चुनाँचे 461 हिजरी में दमिश्क में जामिआ उमवी में एक मीनार तामीर किया गया, जिसे कई साल बाद ईसाइयों ने आग लगा कर तबाह कर दिया। बाद के अद्वार में इस मीनार को दोबारा तामीर किया गया लेकिन फिर आतिशज़दगी से यह मीनार और मसजिद दोनों जल गए। तीसरी मर्तबा 805 हिजरी में शाम के गवर्नर ने इस मीनार की तामीर का काम शुरू किया और उसे 'मीनारतुल ईसा' का नाम दिया गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिन की बअसत कादियान की बस्ती जो दमिश्क के ऐन पूर्व में स्थित है में हुई, आप ने भी हुज़ूर सल्ल-ल्लाहो अलैहे वसल्लम की इस पेशगोयी की ज़ाहिरी अलामत को पूरा करने के लिए एक मीनार की तामीर शुरू करवाई। जो कुछ ना मुसाइद माली हालात की वजह से आप के अहद-ए-मुबारक में मुकम्मल न हो सकी लेकिन आप के दूसरे खलीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहो अन्हु के अहद-ए-खिलाफत के इब्ति-दाई दो सालों में ही यह तामीर मुकम्मल हो कर यह मीनार 1915 में अपनी तकमील को पहुँचा और आज भी आप अलैहिस्सलाम की बअसत के मकाम पर 'मीनार-ए--मसीह' के नाम से मौजूद है। बानी-ए-जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी मसीह मौऊद व महदी मौऊद अलैहिस्सलाम इस मीनार की तामीर की ग़र्ज़ो-ग़ायत वर्णन करते हुए फरमाते हैं: "हदीस-ए-नबवी में जो मसीह मौऊद की निस्बत लिखा गया था कि वह मनारतुल बैज़ा (सफ़ेद मीनार) के पास नाज़िल होगा उस से यही ग़र्ज़ थी कि मसीह मौऊद के वक़्त का यह निशान है कि इस वक़्त बबाअसे दुनिया के बाहमी मेलजोल के और निज़ राहों के खुलने और सहूलते मुलाक़ात की वजह से तबलीगे अहकाम और दीनी रौशनी पहुँचाना और निदा करना ऐसा सहल होगा कि गोया यह व्यक्ति मीनार पर खड़ा है... ग़र्ज़ मसीह के ज़माने के लिए मीनार के लफ़्ज़ में यह इशारा है कि उस की रौशनी और आवाज़ जल्द तर दुनिया में फैलेगी। और यह बातें किसी और नबी को मयस्सर नहीं आईं।" (मजमूआ इश्तिहारात, भाग सोम, पृष्ठ 51, मतबुआ 2019) फ़रमाया: "ख़ुद इस मीनार के अंदर ही एक हक़ीक़त मख़्फ़ी है और वह यह कि अहादीस-ए-नबविया में मुतवातिर आ चुका है कि मसीह आने वाला साहिबुल मनारह होगा अर्थात उस के ज़माने में इस्लामी सचाई बुलंदी के इंतिहा तक पहुँच जाएगी जो इस मीनार की मानिंद है जो निहायत ऊँचा हो। और दीन-ए-इस्लाम सब दीनों पर ग़ालिब आ जाएगा उसी के मानिंद जैसा कि कोई व्यक्ति जब एक बुलंद मीनार पर अज़ान देता है तो वह आवाज़ समस्त आवाज़ों पर ग़ालिब आ जाती है। सो मुक़द्दर था कि ऐसा ही मसीह के दिनों में होगा। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: हुवल्लज़ी अरसला रसूलहु बिल्हुदा व दीनिल हक़्के लियुज़्हिरहु अलद्दीने कुल्लिहि। (अस्सफ: 10) यह आयत मसीह मौऊद के हक़ में है और इस्लामी हुज्जत की वह बुलंद आवाज़ जिस के नीचे समस्त आवाज़ें दब जाएँ वह अज़ल से मसीह के लिए ख़ास की गई है और क़दीम से मसीह मौऊद का क़दम इस बुलंद मीनार पर क़रार दिया गया है जिस से बढ़ कर और कोई इमारत ऊँची नहीं।" (मजमूआ इश्तिहारात, भाग सोम, पृष्ठ 52, मतबुआ 2019) फ़रमाया: "याद रहे कि इस मीनार के बनाने से अस्ल ग़र्ज़ यह है कि ता पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पेशगोयी पूरी हो जाए। इसी ग़र्ज़ के लिए पहले दो दफ़ा मीनारे दमिश्क की शर्की तरफ बनाया गया था जो जल गया। यह उसी किस्म की ग़र्ज़ है जैसा कि हज़रत उमर रज़ि-यल्लाहो अन्हु ने एक सहाबी को किसरा के माले ग़नीमत में से सोने के कड़े पहनाए थे ता एक पेशगोयी पूरी हो जाए।"

(मजमूआ इश्तिहारात, भाग सोम, पृष्ठ 80, मतबुआ 2019, हाशिया)

अहादीस में हज़रत ईसा बिन मरयम के ज़ुहूर के चालीस साल बाद क़ियामत आने का जो वर्णन है तो उस में भी कई उमूरे क़ाबिले तशरीह हैं जैसा कि भविष्यवा-णियों का ख़ासा होता है कि उन में कई बातें ताबीरतलब होती हैं। पस एक तो ख़ुद लफ़्ज़ 'क़ियामत' तशरीहतलब है क्योंकि क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस-ए-नबवि-या सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम में 'क़ियामत' का लफ़्ज़ मुख़्तलिफ मअनी में वर्णन हुआ है। 'क़ियामत' का लफ़्ज़ उस आलमगीर तबाही के लिए भी आया है जब इस दुनिया की सफ लपेट दी जाएगी। हर इंसान की मौत भी उस के लिए क़ियामत होती है। नबी का ज़माना भी दुश्मनों के लिए क़ियामत का रंग रखता है जब उन के बातिल

अक़ाइद को पराजय होती है और हक़ को ग़लबा अता होता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अहद-ए-मुबारक भी अहले अरब के लिए एक क़ियामत ही था जिस के मुतअल्लिक अल्लाह तआला ने फ़रमाया: इक़्तरबतिस्साअतु वन्शक़्कल क़मरु। (अल-क़मर: 2) अर्थात (अरब की) तबाही की घड़ी आ गई है और चाँद फट गया है। इसी लिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं और क़ियामत इस तरह क़रीब हैं जिस तरह यह (दरमियानी और शहादत की) दो उँगलियाँ। (सही बुख़ारी, किताबुत तलाक) इसी तरह किसी तरक्कीयाफ़्ता क़ौम का तनज़्ज़ुल या किसी मग़लूब क़ौम का अचानक तरक्की पाना भी 'क़ियामत' के मअनी में आता है।

हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम अर्थात मसीह मुहम्मदी के ज़ुहूर के चालीस साल बाद क़ियामत के वर्णन पर मुश्तमिल अहादीस का मतलब यह है कि गुज़िशता हज़ार साल के अर्से में और ख़ुसूसन मसीह मौऊद की बअसत से क़बल इस्लाम की कमज़ोरी और कस्मपर्सी की यह हालत हो गई थी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की यह पेशगोयी लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ पूरी हो चुकी थी कि यूशिकु अन यअतिया अलान्नासि ज़मानुन ला यब्क़ा मिनल इस्लामि इल्लास्मुहु, व ला यब्क़ा मिनल क़ुरआनी इल्ला रस्मुहु, मसाजिदुहुम आमिरतुन व हिया ख़राबुन मिनल हुदा, उलमाउहुम शर्रु मन तहता अदीमिस्समाए मिन इंदिहिम तख़रुजुल फ़ितनु व फीहिम तअूद। अर्थात क़रीब है कि लोगों पर ऐसा ज़माना आए कि जब इस्लाम का सिर्फ नाम बाक़ी रह जाएगा और क़ुरआन-ए-करीम के सिर्फ अल्फ़ाज़ बाक़ी रह जाएँगे। उन की मसजिदें ज़ाहिर में तो आबाद होंगी लेकिन हिदायत के लिहाज़ से बिलकुल वीरान होंगी। उस ज़माने के लोगों के उलमा आसमान के नीचे बसने वाली बदतरीन मख़्लूक में से होंगे क्योंकि उन्हीं में से फितने उठेंगे और उन्हीं में लौट जाएँगे। (शुआबुल ईमान लिल बैहक़ी, फस्लु क़ाला व यंबग़ी लितालिबे इल्मिन अन यकूना तअल्लुमुहु... हदीस: 1858) मुसलमानों के बड़े-बड़े उलमा इस्लाम छोड़ कर ईसाइयत इख़्तियार कर रहे थे और इस्लाम पर हर मज़हब की तरफ से ताबड़तोड़ हमले किए जा रहे थे और कोई व्यक्ति उन हमलों के उत्तर के लिए मैदान में नहीं आ रहा था। सय्यदुल मअसूमीन रहमतुल्लिल आलमीन हज़रत अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़ात-ए-अतहर और आप की अज़वाजे मुतह्हरात के ख़िलाफ़ खुलम-खुला गंदा दहनी की जा रही थी। उस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की भविष्यवाणियों के ऐन मुताबिक़ आप के ग़ुलाम-ए-सादिक़ मसीह मुहम्मदी अलैहिस्सलाम की बअसत हुई और आप ने इस्लाम पर होने वाले हर हमले का मुँहतोड़ उत्तर दिया और हर दुश्मने इस्लाम को मैदान से फ़रार इख़्तियार करना पड़ी। और इस तरह अल्लाह तआला ने आप के ज़रिए इस्लाम को एक मर्तबा फिर पूरी शानो-शौकत अता फ़रमाई और उसे बाक़ी समस्त मज़ाहिब पर ग़ालिब कर के दिखाया और आप अलैहिस्सलाम ने इस्लाम और बानी-ए-इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मदाह में बरमला फ़रमाया:

हर तरफ़ फ़िक्र को दौड़ा के थकाया हम ने
कोई दीन-ए-मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) सा न पाया हम ने
कोई मज़हब नहीं ऐसा कि निशाँ दिखलावे
यह समर बाग़-ए-मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) से ही खाया हम ने
हम ने इस्लाम को ख़ुद तजर्बा कर के देखा
नूर है नूर उठो देखो सुनाया हम ने
और दीनों को जो देखा तो कहीं नूर न था
कोई दिखलाए अगर हक़ को छुपाया हम ने
थक गए हम तो उन्हीं बातों को कहते कहते
हर तरफ़ दाअवतों का तीर चलाया हम ने
आज़माइश के लिए कोई न आया हरचंद
हर मुख़ालिफ को मुक़ाबिल पे बुलाया हम ने

अतः यह वह क़ियामत है जो मसीह मुहम्मदी अलैहिस्सलाम और आप के बाद क़ायम होने वाली 'खिलाफत अला मिन्हाजिन्नबुव्वत' के ज़रिए इस्लाम और मुख़ालिफ़ीने इस्लाम के लिए ज़ाहिर हुई। जिस के नतीजे में इस्लाम और बानी-ए-इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का नाम और आप की पेश की हुई हक़ीक़ी तालीम दुनिया के किनारों तक पहुँची और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से आज भी इस रूहानी जिहाद में दिन दोगुनी और रात चौगुनी तरक़्क़ी हो रही है और मुख़ालिफ़ीने इस्लाम की ज़मीन रोज़ बरोज़ घटती चली जा रही है। अल्लाह तआला आप की रहनुमाई फरमाए, आप को हक़ और हिदायत की राह को पहचानने और उसे क़बूल करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए और हमेशा अपने फ़ज़्लों से नवाज़ता रहे। आमीन।

भाग 42

प्रश्न: यमन के एक दोस्त ने बीवी को दिए जाने वाले तीन तलाक़ों के बारे में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा-ए-अक़्दस में मार्गदर्शन की दरख़्वास्त की। जिस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मक़्तूब (पत्र) तिथि (तारीख़) 23 अगस्त 2021 ई. में इस मसले पर निम्नलिखित मार्गदर्शन फ़रमाया। हज़रत अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: असल में जब कोई व्यक्ति अपनी बीवी को तलाक़ देता है तो बीवी की किसी नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त और फ़ज़ूल हरकत पर नाराज़ होकर यह क़दम उठाता है। बीवी से ख़ुश होकर तो कोई इंसान अपनी बीवी को तलाक़ नहीं देता। इसलिए ऐसे गुस्से की हालत में दिया जाने वाला तलाक़ भी मौजर (प्रभावी) होता है। लेकिन अगर कोई इंसान ऐसे तैश (उत्तेजना) में था कि उस पर जुनून-सी क़ैफ़ियत तारी थी और उसने नतीजों से बेपरवाह होकर जल्दबाज़ी में अपनी बीवी को तलाक़ दी और फिर उस जुनून की क़ैफ़ियत के ख़त्म होने पर नादिम (पश्चातापी) हुआ और उसे अपनी गलती का एहसास हुआ तो इसी क़िस्म की क़ैफ़ियत के बारे में क़ुरआन-ए-करीम ने फ़रमाया है कि لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ (सूरः बक़रह: 226) अर्थात अल्लाह तुम्हारी क़समों में (से) लग़ाव (बेमतलब क़समों) पर तुमसे मुवाख़ज़ा (दोषी नहीं ठहराएगा। हाँ, जो (गुनाह) तुम्हारे दिलों ने (बिल-इरादा/जानबूझकर) कमाया है, उस पर तुमसे मुवाख़ज़ा करेगा और अल्लाह बख़्शने वाला (और) बर्दबार (सहनशील) है।

आप की वर्णन की हुई सूरत से तो ज़ाहिरन यही लगता है कि आप अलग-अलग वक़्तों में अपनी बीवी को तीन तलाक़ें दे चुके हैं और क़ुरआन-ए-करीम ने एक मुसलमान को जो तीन तलाक़ के इस्तेमाल का हक़ दिया है, आप उसे इस्तेमाल कर चुके हैं और अब आप अपनी बीवी से रुजू' (वापसी) करने का हक़ नहीं रखते। जब तक कि हत्ता तन्किहा ज़ौजन ग़ैरह वाली शर्त पूरी न हो।

बहरहाल, इन उमूर (बातों) की रोशनी में आप ख़ुद अपना जायज़ा लेकर अपने मुताल्लिक़ फ़ैसला करें कि आप की तलाक़ हक़ीक़ी रंग में थी या लग़ाव तलाक़ के ज़ुमरे (श्रेणी) में आती है।

प्रश्न: जर्मनी से एक ख़ातून (महिला) ने लड़कों और लड़कियों द्वारा अपने शरीर के विभिन्न हिस्सों पर पियर्सिंग (Piercing) कराने के बारे में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मसला दरयाफ़्त (पूछा) किया है। जिस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मक़्तूब तिथि 23 अगस्त 2021 ई. में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया:

उत्तर: इस्लाम ने चीज़ों की हलाल और हराम के अहकाम के अतिरिक्त कुछ अश्या (चीज़ों) के तय्यिब (पवित्र/अच्छा) और ग़ैर तय्यिब होने और कुछ कामों के लग़ाव (बेमतलब/व्यर्थ) होने के बारे में भी तालीमात दी हैं। ज़ेवर (आभूषण) पहनने के लिए लड़कियों के कान और नाक की हद तक पियर्सिंग कराने का रिवाज शुरू से चला आता है और इसमें किसी क़िस्म की क़बाहत (बुराई) और ममानियत (मनाही) नहीं पाई जाती। लेकिन लड़कों के लिए तो कान और नाक वग़ैरह छिदवाना भी नाप-सन्दीदा (अनुपयुक्त) और लग़ाव काम है।

हर काम की एक हद होती है, जब उस हद से तजावुज़ (अतिक्रमण) किया जाए तो एक जाइज़ (जायज़) काम भी कभी-कभी नाजाइज़ या लग़ाव के ज़ुमरे में शामिल हो जाता है। जिस में पड़ने से एक मोमिन को मना किया गया है। (सूरः मोमिनून: 4)

निपल्स (स्तन के अग्रभाग) और शरीर के ऐसे हिस्सों पर पियर्सिंग कराना, जिन्हें इस्लाम ने पर्दे में रखने का हुक्म दिया है, उन पर ऐसा काम कराना तो वैसे ही बे-हयाई और खिलाफ़-ए-शरीअत (शरीयत के विरुद्ध) फ़ेल (काम) है। बाक़ी ज़बान (जीभ) पर और होंठों के अंदर और बाहर पियर्सिंग कराना कई क़िस्म की बीमारियों और इन्फेक्शन (संक्रमण) का बाइस (कारण) हो सकता है। इसलिए मेरे नज़दीक तो लड़कियों के लिए भी पर्दे में रहते हुए केवल नाक और कान में ज़ेवर के इस्तेमाल के लिए पियर्सिंग कराने की इजाज़त है और इस से ज़्यादा उनके लिए भी यह काम लग़ाव और नाजाइज़ के ज़ुमरे में आएगा।

प्रश्न: डेनमार्क से एक मुरब्बी (शिक्षक/गुरु) साहब ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा-ए-अक़्दस में तहरीर (लिखा) कि रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अशरे और ज़ुल-हिज्जा के पहले अशरे में से किसकी फ़ज़ीलत ज़्यादा है? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मक़्तूब तिथि 25 अगस्त 2021 ई. में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया:

उत्तर: क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस-ए-नबविया सल्लल्लाहो अलैहि व

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 18 September 2025 Issue No. 38

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

सल्लम में इन दोनों महीनों की फ़ज़ीलत का कोई बाहमी (आपसी) तक़ाबुली (तुलनात्मक) जायज़ा तो वर्णन नहीं हुआ। बल्कि दोनों महीनों और उन में होने वाली इबादतों के कसरत (बहुतायत) से फ़ज़ाइल (फ़ज़ीलतें) और बरकात वर्णन हुई हैं। यह फ़ज़ाइल उमूमी (सामान्य) रंग में भी वर्णन हुई हैं और कभी-कभी हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने किसी प्रश्न पूछने वाले के हालात के पेश-ए-नज़र और कभी मौक़ा-ए--महल (स्थान और परिस्थिति) के लिहाज़ से भी उन्हें वर्णन फ़रमाया है।

क़ुरआन-ए-करीम और हदीस में वर्णन होने वाली इन फ़ज़ीलतों की बिना पर कुछ एतबार (दृष्टिकोण) से रमज़ानुल मुबारक का आख़िरी अशरा और उसमें की जाने वाली इबादतें और उसमें नाजिल होने वाले अहकाम ज़ाहिरन ज़्यादा अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) क़रार पाते हैं और कुछ लिहाज़ से ज़ुल-हिज्जा का पहला अशरा और उसकी इबादतें ज़ाहिरन ज़्यादा अफ़ज़ल ठहरते हैं। चुनांचे हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक मौक़े पर फ़रमाया: सैय्यिदुश शुहूरी शहरु रमज़ान व अअज़मुहा हुरमतन ज़ुल--हिज्जह। (शुआबुल ईमान लिल बैहक़ी, फ़स्ल तख़सीसे अय्यामिल अशर मिन ज़िल--हिज्जह, हदीस नंबर 3597) अर्थात तमाम महीनों का सरदार रमज़ान का महीना है और उन में से हुरमत (सम्मान/प्रतिष्ठा) के एतबार से सब से अज़ीम ज़ुल-हिज्जा का महीना है।

प्रश्न: घाना से एक दोस्त ने हज़रत अनवर ऐदहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ की सेवा-ए-अक़्दस में तहरीर किया कि अगर किसी ने मय्यत (मृत व्यक्ति) को छुआ हो तो क्या उसके लिए ग़ुस्ल-ए-जनाबत करना फ़र्ज़ है और क्या वह बिना ग़ुस्ल किए नमाज़-ए-जनाज़ा में शामिल हो सकता है? हज़रत अनवर ऐदहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने अपने मक़्तूब मूरख़ा 25 अगस्त 2021 ई. में इस मसले के बारे में निम्नलिखित मार्गदर्शन फ़रमाई। हज़रत अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि हज़रत सल्ल--ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: लैसा अलैकुम फी ग़स्लि मैय्यितिकुम ग़ुस्लुन इज़ा ग़सलतुमूहु फ़इन्ना मैय्यितकुम लैसा बिनजसिन फहसबुकुम अन तग़सिलू ऐदीकुम। (अल-मुस्तदरक अला अस-सहीन लिल-हाकिम, किताबुल जनाइज़, बाब लैसा अलैकुम फी ग़स्लि मैय्यितिकुम ग़ुस्ल) अर्थात जब तुम अपने किसी मुरदे (मृत) को ग़ुस्ल दो तो उसके बाद तुम पर ग़ुस्ल वाजिब नहीं। क्योंकि तुम्हारे मुरदे नजिस (अपवित्र) नहीं होते। मुरदे को ग़ुस्ल देने के बाद तुम्हारा हाथ धो लेना काफ़ी है।

इसी तरह मुवत्ता इमाम मालिक में हज़रत अस्मा बिन्ते उमैस रदियल्लाहु अन्हा के बारे में आता है कि जब उन्होंने अपने खाविंद (पति) हज़रत अबू बकर सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हु की वफात पर उन्हें ग़ुस्ल दिया तो ग़ुस्ल देने के बाद वहाँ मौजूद मुहाजेरीन से पूछा कि क्या अब मेरे लिए ग़ुस्ल करना ज़रूरी है? तो इस के उत्तर में उन लोगों ने कहा कि नहीं। (मुवत्ता इमाम मालिक, किताबुल जनाइज़, बाब ग़ुस्लिल मैयित)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हम मुरदे को ग़ुस्ल दिया करते थे। फिर हम में से कुछ ख़ुद ग़ुस्ल कर लिया करते थे और कुछ ग़ुस्ल नहीं करते थे। (सुनन दार-ए-क़ुतनी, किताबुल जनाइज़, बाबुत तसलीमि फिल जनाजह वाहिदन वत तकबीरु अर्बआन व खमसा)

इन अहादीस के मुक़ाबिल (विपरीत) पर सुनन अबी दाऊद में मर्वी (वर्णित) हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु की एक रिवायत में यह ज़िक्र आता है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो मुरदे को ग़ुस्ल दे उसे चाहिए कि ग़ुस्ल करे। इसी तरह हज़रत आयशा रदियल्लाहु अन्हा की एक रिवायत में है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चार चीज़ों की वजह से ग़ुस्ल फ़रमाया करते थे: जनाबत की वजह से, जुमा के रोज़, सिंघी (रक्तचूषण/कuppping) लगवाने से और मुरदे को ग़ुस्ल देकर।

लेकिन इस मज़मून (विषयवस्तु) की रिवायतों को उलमा-ए-हदीस ने ज़ईफ़ (कमज़ोर) और मंसूख़ (रद्द) क़रार दिया है। निज़ (साथ ही) कहा है कि ग़ुस्ल से मुराद केवल हाथों का धोना है।

फ़ुक़हा-ए-अरबा (चारों इमामों) के नज़दीक भी मय्यत को ग़ुस्ल देने के बाद ग़ुस्ल करना वाजिब नहीं, केवल मुस्तहब (पसंदीदा) है ताकि मय्यत को ग़ुस्ल देने की वजह से अगर इंसान को कोई गंदगी लग गई हो या गंदे पानी के छींटे इंसान के बदन पर पड़ गए हों तो ग़ुस्ल के नतीजे में उसकी सफ़ाई हो जाए। पस जब मय्यत को ग़ुस्ल देने की वजह से नहलाने वाले पर ग़ुस्ल वाजिब नहीं होता तो मय्यत को छूने वाले पर किस तरह ग़ुस्ल वाजिब हो सकता है। लिहाज़ा मय्यत को ग़ुस्ल देने वाला बिना ग़ुस्ल के नमाज़-ए-जनाज़ा में शामिल हो सकता है, इसमें कोई ममानियत नहीं। हाँ, फ़ुक़हा ने यह लिखा है कि जिस तरह बाक़ी नमाज़ों के लिए वज़ू ज़रूरी है उसी तरह नमाज़--ए-जनाज़ा के लिए भी वज़ू करना ज़रूरी है, वह उसे करना चाहिए।

प्रश्न: कनाडा से एक दोस्त ने हज़रत अनवर ऐदहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ की सेवा-ए-अक़्दस में तहरीर किया कि क्या अल्लाह तआला का नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) इस दुनिया में तकलीफ़ और मुसीबतों में रहता है या मोमिन तकलीफ़ों का शिकार रहता है? हज़रत अनवर ऐदहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने अपने मक़्तूब मूरख़ा 25 अगस्त 2021 ई. में इस बारे में निम्नलिखित इरशादात फ़रमाए। हज़रत अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: हमारे आक़ा व मौला हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने निहायत पुर-हिक्मत कलाम के ज़रिए यह मज़मून हमें समझा दिया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं: अद-दुनया सिजनुल मोमिनि व जन्नतुल काफ़िर। अर्थात यह दुनिया मोमिन की क़ैद और काफ़िर की जन्नत है। (सही मुस्लिम, किताबुज़ जुह्द वर रकाइक, बाब नंबर 1) इस जामे' व माने' (व्यापक और सारगर्भित) कलाम में हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें यह बात समझाई है कि एक मोमिन अल्लाह तआला की तरफ़ से हराम और नापसन्दीदा क़रार दी जाने वाली शहवात-ए-दुनया (दुनियावी इच्छाएँ) उसी की ख़ातिर छोड़ देता है, अल्लाह तआला की रिजा के हुसूल (प्राप्ति) की ख़ातिर और उसकी इताअत में मुजाहिदात (संघर्ष) करता और मुश्किलात बर्दाश्त करता है, इसलिए यह दुनिया ज़ाहिरन उसके लिए एक क़ैदखाने की मानिंद हो जाती है। लेकिन जब वह फ़ौत (मरता) होता है तो उसकी इस आरज़ी (अस्थायी) क़ुरबानी के नतीजे में उख़रवी (पारलौकिक) और दाइमी (स्थायी) ज़िंदगी में उसको इन मुसीबतों और मुश्किलात से इस्तिराहत (आराम) नसीब होती है और वह उन दाइमी इनामात का वारिस क़रार पाता है जिन का अल्लाह तआला ने उससे वादा किया होता है। जबकि एक काफ़िर अल्लाह तआला के हुक्मों को पस-पुश्त (पीठ पीछे) डाल कर इस आरज़ी दुनिया के हर क़िस्म के हलाल और हराम सामान--ए-ज़िंदगी से फ़ायदा उठाता और इसी दुनिया को अपने लिए जन्नत ख़्याल करता है। लिहाज़ा जब वह मरता है तो इस दुनिया में किए गए अपने करमों (कर्मों) की वजह से उसे उख़रवी और दाइमी ज़िंदगी में अज़ाब-ए-इलाही का सामना करना पड़ता है।

पस एक सच्चे मोमिन के लिए ज़रूरी है कि वह हर वक़्त इस बात को अपने पेश-ए-नज़र रखे कि दुनयवी ज़िंदगी दरअसल एक आरज़ी ज़िंदगी है और उसकी तकलीफ़ें भी आरज़ी हैं। और जिन लोगों को इस आरज़ी ज़िंदगी में कोई तकलीफ़ पहुँचती है, अल्लाह तआला उसके बदले में ऐसे व्यक्ति की उख़रवी ज़िंदगी, जो दरअसल दाइमी ज़िंदगी है, की तकलीफ़ें दूर फ़रमा देता है। चुनांचे हदीस में आता है कि एक मोमिन को इस दुनिया में जो भी तकलीफ़ें पहुँचती हैं, यहाँ तक कि रास्ता चलते हुए जो काँटा भी चुभता है, उसके बदले में भी अल्लाह तआला उसके नामा-ए-आमाल (कर्म-पत्र) में अज्र (पुण्य) लिख देता है या उसकी ख़ताएँ (गलतियाँ) माफ़ फ़रमा देता है। (सही मुस्लिम, किताबुल बिर्रि वस्सिलति वल आदाब, बाब सवाबिल मोमिनि फीमा युसीबुहू मिन मरज़िन औ हुज़निन...) इस दुनयवी ज़िंदगी की मुसीबतों में अल्लाह तआला अपने प्यारों को सब से ज़्यादा डालता है। इसी लिए हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि लोगों में से अंबिया पर सब से ज़्यादा आज़माइशें आती हैं, फिर रुत्बे (पद) के मुताबिक़ दर्जा बदर्जा बाक़ी लोगों पर आज़माइश आती है। हज़रत आयशा रदियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने किसी आदमी को हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़्यादा दर्द में मुब्तला नहीं देखा। (सही बुख़ारी, किताबुल मर्ज़ा, बाब शिद्दतिल मरज़) चुनांचे हम जानते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कई बच्चे फ़ौत हुए, हालांकि केवल एक बच्चे की विफात का दुख ही बहुत बड़ा दुख होता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "क़ुरआन करीम के दूसरे मकाम में जो यह आयत है: व इन मिनकुम इल्ला वारिदुहा काना अला रब्बिका हतमम मक़्ज़िय्या। सुम्मा नुनज्जिल्लज़ीना त्तकव व नज़रुज़ ज़ालिमीना फीहा जिसिय्या। (सूरह मरयम: 72-73) यह भी दरहक़ीक़त सिफ़त-ए-मम्मूदा-ए-ज़लूमियत (प्रशंसित दुर्दशा) की तरफ ही इशारा करती है और तर्जुमा-ए-आयत यह है कि तुम में से

शेष पृष्ठ 9 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad